प्रदीप

श्री दुर्गा स्तुति

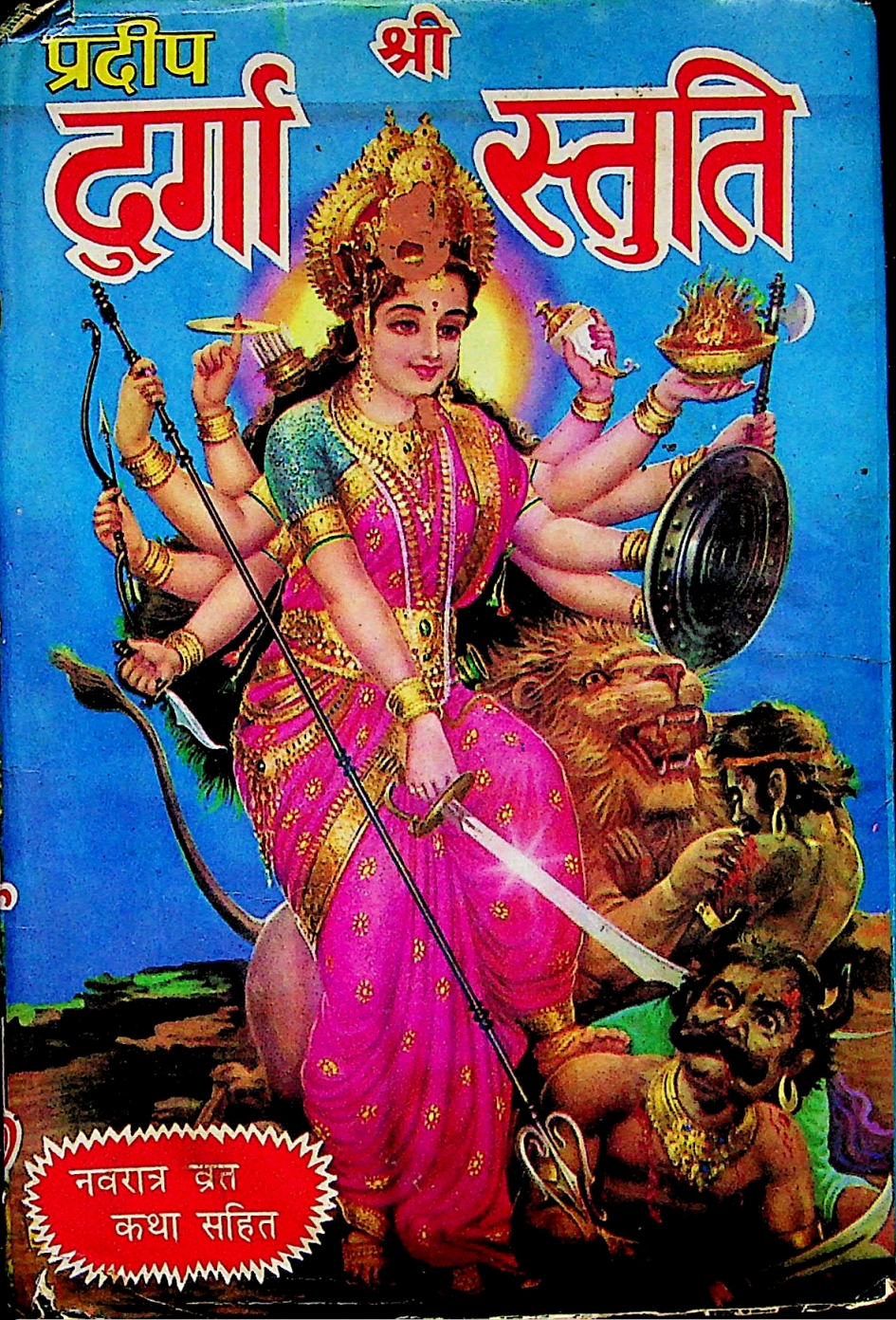

नवरात्र व्रत
कथा सहित

प्रदीप

श्री दुर्गा स्तुति

सम्पूर्ण श्री दुर्गा सप्तशती का कविता अनुवाद चित्रों सहित

• सप्तश्लोकी दुर्गा पाठ • देवी कवच • अर्गला स्तोत्र • कीलक स्तोत्र • सप्तशती के १३ अध्याय सम्पूर्ण सचित्रों सहित • श्री दुर्गा के १०८ नामों का मङ्गलकारी जाप • पाठ विधि • मां काली की स्तुति • भेटों एंव आरतियों का संग्रह • श्री दुर्गा नवरात्र व्रत कथा • श्री दुर्गा चालीसा

लेखक

रमेश "शौकी"

प्रदीप पब्लिशर्ज़

N.D. 259, पुरानी कचैहरी,

अड्डा टांडा, जालन्धर शहर -144008

- श्री दुर्गा स्तुति
  (श्री दुर्गा सप्तशती का कवितानुवाद)
- लेखक : रमेश 'शौकी'

©कॉपीराइट सर्वाधिकार

प्रदीप पब्लिशर्ज़, पुरानी कचैहरी, अड्डा टांडा,
जालन्धर शहर-144008

इस पुस्तक के सर्वाधिकार 'प्रदीप पब्लिशर्ज़' द्वारा सुरक्षित हैं । इस लिए कोई भी सज्जन इस पुस्तक का नाम, टाइटल डिजाइन, अन्दर का सैटर व चित्र आदि आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मोड़ कर छापने का साहस न करें अन्यथा कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार होंगे ।

मूल्य : 12/-

Printed at :
KHANNA PRINTERS
Phagwara Gate Jalandhar.
Ph. 55540.

प्रकाशक : प्रदीप पब्लिशर्ज़
पुरानी कचैहरी, अड्डा टांडा, जालन्धर शहर-144008.

मेरा नम्र निवेदन

भगवती दुर्गा की उत्पत्ति एवं चरित्रों का वर्णन श्री मार्कण्डेय पुराण के अन्तर्गत देवी माहात्म्य में है । यह देवी माहात्म्य ७०० श्लोकों में वर्णित होने के कारण 'दुर्गा सप्तशति' के नाम से प्रसिद्ध है ।

प्रस्तुत पुस्तक धार्मिक ग्रंथों के गहन अध्ययन एवं विद्वानों से विचार-विमर्श के पश्चात् लिखी गई है । अकारण भगतजनों को भययुक्त या भ्रमयुक्त करने की अपेक्षा उनके सुखद जीवन की कामना करते हुए उनके मङ्गल के लिए पुस्तक में कथा का वर्णन है । क्योंकि पुस्तक भगतजनों के या पाठों के मङ्गलमयी जीवन की कामना में लिखी गई है इसलिए मैंने अपना नाम बार-बार दोहों आदि में देने से संकोच किया है । पाठ का क्या फल है वह भी पुस्तक में वर्णित है । पाठकों की सेवा में मेरा निवेदन है कि पाठ किसी विद्वान से करवाया जाये तो शीघ्र फल देने वाला एवं कार्यसिद्धि करने वाला होता है ।

दुर्गा सप्तशति की कोई महत्वपूर्ण बात एवं घटना छोड़ी न जा सके, इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है । क्रम से श्री दुर्गा कवच, अर्गलास्तोत्र, कीलक स्तोत्र एवं पहले अध्याय से तेहरवां अध्याय तथा फिर प्रार्थना एवं श्री दुर्गा देवी के १०८ नामों का मङ्गलकारी जाप, मां काली स्तोत्र तथा मां की आरती एवं सुविधानुसार दुर्गा-चालीसा आदि मन को शांति एंव जीवन में मङ्गलकारी फल देने वाले होते हैं । चौथा, पाँचवां तथा ग्याहरवां अध्याय विशेष रूप से कल्याणकारी है ।

उन सब विद्वानो एवं भगतजनों का हार्दिक अभारी हूं जिनकी संगति से मुझे अपरम्पार मां की महिमा का वर्णन करने में सहायता मिली। यदि आपका मार्ग-दर्शन एवं शुभ राय मुझे मिल सके तो अपने को धन्य समझूंगा । प्रदीप पब्लिशर्ज़ वालों के अपार स्नेह एवं प्रेरणा से यह सब सम्भव हो सका है अतः उनका विशेष आभार ।

अन्त में —

सिंहवाहिनी मात को बार-बार प्रणाम ।
जिनके किये ही होत है हमरे सब ही काम ॥

आपके सुखद भविष्य की कामना सहित आपका :

—रमेश 'शौकी'
304/15, कृष्ण नगर
(समीप आदर्श नगर),

सप्तश्लोकी दुर्गा पाठ

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥१॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्रय दुःख भयहारिणि का त्वदन्या ।
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥२॥
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥३॥
शरणागत दीनार्तपरित्राण परामणे ।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥४॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समम्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥५॥
रोगानशेषानपंहसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥६॥
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्· वैरी विनाशनम् ॥७॥

॥ इति श्री सप्तश्लोकी दुर्गा पाठ सम्पूर्ण ॥

किस अध्याय के पाठ से किस कार्य की सिद्धि होती है

पहला अध्याय	:	चिंता दूर करने के लिए, शत्रु से भय एवं उसको नष्ट करने के लिए ।
दूसरा अध्याय	:	शत्रु द्वारा सम्पत्ति एवं भूमि पर अधिकार कर लेने के बाद उसे फिर से अपने अधिकार में करने के लिए ।
तीसरा अध्याय	:	शत्रु पर विजय पाने के लिए ।
चौथा अध्याय	:	धन, पत्नी एवं ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति के लिए ।
पाँचवाँ अध्याय	:	भूत-प्रेत बाधा, भय आदि के नाश के लिए ।
छटा अध्याय	:	कामना-सिद्धि के लिए ।
सातवाँ अध्याय	:	मनोकामना पूरी करने के लिए ।
आठवाँ अध्याय	:	सुरक्षा आदि हेतु ।
नौवाँ अध्याय	:	सम्पत्ति एवं लाभ-प्राप्ति के लिए ।
दसवाँ अध्याय	:	शक्ति तथा सन्तान सुख के लिए ।
ग्यारहवाँ अध्याय	:	भक्ति, मुक्ति एवं भविष्य की चिंता दूर करने हेतु ।
बारहवाँ अध्याय	:	रोगमुक्ति एंव भय दूर करने के लिए ।
तेरहवाँ अध्याय	:	मन-वांछित वस्तु की प्राप्ति के लिए ।

यात्रा पर जाने से पूर्व दुर्गा कवच का पाठ एवं सर्वसिद्धि के लिए श्री दुर्गा चालीसा का पाठ करें ।

दुर्गा सप्तशती पाठ विधि

प्रातः काल स्नान आदि से निवृत्त होकर शुद्ध आसन बिछा कर भगवती माँ की मूर्ति के सामने बैठ जायें । अपने पास पुष्प, धूप, दीप, फल, जल, मौली आदि रख लें । आसन पर बैठ कर मौली बांधें, साथ में मंत्र का उच्चारण करें :-

ॐ सर्व मङ्गल माङ्गल्ये, शिवे सर्वार्थे साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरी, नारायणी नमोऽस्तुते !!

अर्थात् – हे सम्पूर्ण मङ्गलरूपिणी, हें शिवे, हे सम्पूर्ण अर्थ के साधन करने वाली ! हे शरण देने वाली, हे तीन नेत्रों वाली, हे गौरी, हे नारायणी, आपको नमस्कार है ।

मौली बंधवाने के पश्चात् चन्दन या भस्म का तिलक लगा लें एवं निम्न मन्त्र का जाप करें :-

चन्दस्य महत पुण्यं
पवित्र पाप नाशनम्
आपदा हरते नित्यं लक्ष्मी तिष्ठति सर्वदा ।

गंगा के पूजन के पश्चात् जल को चारों दिशा के पूजन के लिए निम्न मंत्र से छिड़कें :-

ॐ अवसर्पन्तु ते भूता ये भूताः भुवि संस्थिता,
ये चात्र विघ्न कर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया,
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा सर्वती दिशाय ।
सर्वेषाम विरोधेन शुभ कर्म समारभे ॥

गणपति पूजन के लिए निम्न मन्त्र पढ़ें :-

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि बुद्धि सहित, श्री गणपते इस गच्छ तिष्ठ सुप्रतिष्ठ, वरदोभवः ॐ एषो अर्घा श्री भगवद्, गणपतये नमः पुष्पं, चन्दनं, समर्पयामि ।

भगवद् गणपतये नमः, धूप दीपं प्रदर्शयामि भगवद् गणपतिये नमः

भगवती मां की प्रसन्नता के लिए नवरात्रों में अष्टमी या नवमी को कन्याओं का पूजन एवं खाना खिलाने का विधान है । कन्याओं की संख्या 9 हो तो ठीक है, उनकी आयु 2 वर्ष से कम तथा 10 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए । दो बालक भी होने चाहिए क्योंकि शास्त्रों में दुर्गा के साथ भैरव तथा हनुमान जी का पूजन भी आवश्यक माना गया है ।

—लेखक

श्री गणेशाय नमः

गणपति वन्दना

सिमरूं प्रथमें गौरी नन्दन,
हे सुखदाता, हे दुःखभंजन,
काटो दुःख के बन्धन । सिमरूं .....
गौरी मां के राजदुलारे,
शिव भोले कीआँख के तारे,
दीन-हीन के आप सहारे,
सब पे सुख बरसायें । सिमरूं.....
शरण तिहारी जोआ जाता,
लड्डुअन का है भोग लगाता,
ऋद्धि-सिद्धि वोह वर पाता,
किस्मत भी मुस्कराये । सिमरूं ....
भूलें हमरी आप भुला दो,
कारज हमरा सफल बना दो,
सोये हमरे भाग्य जगा दो,
हम भी आस लगाये । सिमरूं ....
शरणागत हैं दुविधा हर दो,
जीवन में मङ्गल कर दो,
कृपा का अब हाथ भी धर दो,
'शौकी' महिमा गाये । सिमरूं.....

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

अथ श्री दुर्गा कवच

ऋषि मार्कण्डेय जी पूछते, हे कृपानिधान ।
ब्रह्मा जी बतलाइए, कोई ऐसा विधि-विधान ॥
जीवों का हो रक्षक, कोई ऐसा कहो उपाय ।
जिसको धारण जो करे, परम-पद को पाय ॥
ब्रह्मा जी बोले महात्मन्, मन-चित्त सुनो लगाय ।
देवी कवच जो जगत में, सर्व दुःखों का उपाय ॥
पुण्यदायक कवच यह, सुख-चैन करे प्रदान ।
जीवमात्र का उपकारी यह, शान्ति का देता दान॥

दुर्गा जी की नौ मूर्तियों का, कर लो पहले ध्यान ।
मनन करो नव दुर्गा का, चाहो जो स्व-कल्याण ॥
शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्र घंटा, मन में बसाओ ।
कूष्माण्डा,स्कंदमाता,कात्ययनी ध्यान में इन्हें ले आओ॥
कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री,सब देवियों को प्रणाम।
ब्रह्मा जी के श्री मुख ने, कहे ये पावन नाम॥
वन में, रण में, रोग में, कवच जो सुने सुनाय।
तन में, मन में कष्ट न, वह जन कभी भी पाय ॥
अनिष्ट न होता कभी भी, भय रहित हो जाए।
आपत्ति, शोक, संकट में, कवचधारी न फंस पाए ॥
फिर से बोले ब्रह्मा जी, नव दुर्गा के सुनो स्वरूप ।
तेजमय, आभायुक्त, दर्शनीय, वर्णनीय अनूप॥
चामुण्डा देवी प्रेत चढ़ी, बारही का भैंसा वाहन।
ऐन्द्री सवार हाथी पे, वैष्णवी की गरुड़ पे शान॥
माहेश्वरी वृषभ आरूढ़ हैं,कौमारी मोर पे सुशोभित ।
महालक्ष्मी कमल पर, कमल लिए अति अलौकिक ।।
वृषभ पर बैठी ईश्वरी देवी, श्वेत वरण किये धार ।
आभूषण सुसज्जित ब्रह्मी, हंस पे हुई असवार ॥
सर्व योगों से युक्त,रत्न जड़ित आभूषणों से शोभायमान।
क्रोधयुक्त सब देवियां, रथों पे हैं विराजमान॥

शंख, चक्र, गदा, शक्ति, हल, त्रिशूल, माला और पाश।
दैत्यों का विनाश करे, भगतजनों में जगाएं विश्वास ॥
घोर पराक्रमी, महान् बली, उत्साही महारौद्र हैं रूप ।
भयनाशिनी हे मां देवी, भव्य तुम्हरा दर्श अनूप ॥
दैत्यों की संहारी देवा, रक्षा करना हर मां दिशा ।
अग्निकोण में अग्निशक्ति, वाराही मां दक्षिण दिशा ॥
पश्चिम दिशा वरुण शक्ति, नेर्ऋत्य कोण खड्गधारिणी।
वायव्य कोण में रक्षा करना, मृग असवारिणी ॥
ईशान कोण में शूलधारिणी, उत्तर दिशा में कौमारी ।
ब्रह्माणी ऊपर रक्षक, वैष्णवी देवी नीचे रक्षक हमारी॥
चामुण्डा दस दिशा की रक्षक,जया देवी आगे की ढाल।
विजया पीछे,बाई अजिता,दहिनी अपराजिता रहना दयाल
उद्योतिनी रक्षक बनना शिखा की, उमा रक्षक शीश की।
मालाधारी माथे की, यशस्विनी देवी भौहों की॥
त्रिनेत्रा भौहों के बीच की रक्षा करना ।
यमघण्टादेवी नासिका पे ध्यान मां धरना ॥
शंखिनी मैया नेत्रों में दोष न आने पाए ।
द्वारकावासिनी कान की रक्षा करना दया दिखाय ॥
कालिका देवी गालों की रक्षा करना ।
शांकरी कानों के मूल पे ध्यान मां धरना ॥

नासिका की सुगन्धा, ऊपर के होंठ की यर्चिका देवी।
अमृतकला होंठ की, जीह्वा की सरस्वती देवी॥
कौमारी दांतों की रक्षा करना, चण्डिका कण्ठ स्थान।
चित्रघण्टा गले की, महामाया तालू की रक्षा करो आन॥
कामाक्षी ठोडी की, वाणी की रक्षक बनो सर्वमंगला ।
भद्रकाली गर्दन की, रक्षा करना मां सदा ॥
कण्ठ के बाहरी भाग पे, नील ग्रीवा कृपा बरसाना ।
कण्ठ की नाली पे नलकूबरी माता, अपनी दया दिखाना
दोनों कंधों, दो भुजाओं की रक्षक बनो बज्रधारिणी ।
दोनों हाथों की रक्षा करना, दंडनी जगततारिणी ॥
अंगुलियों की अम्बिका, नख की सूलेश्वरी ।
कोख की फूलेश्वरी, गुहा भाग की गुहेश्वरी ॥
महादेवी मां दो स्तन की, शोक विनाशिनी मेरे मन की॥
ललिता देवी हृदय की, शूलधारिणी मां उदर की ॥
पूतना व कामिनी लिङ्ग की, गुदा की महिषवाहिनी ।
नाभी की कामिनी देवी, घुटनों की विन्ध्यवासिनी ॥
भगवती मां कमर रोगों से, रक्षा करो, रक्षा करो ।
महाबाला दो जंघाओं पे, ध्यान करो, मां ध्यान करो॥
एड़ियों की रक्षक नारसिंही, ऊपरि भाग की तेजसी देवी
श्री देवी पैरों की अंगुलियों की, तलवासिनीं तलुवों की॥

नखों की द्रंष्ट्राकराली, उर्ध्वकेशिनी केशों की ।
कौमारी माता रोम छिद्र की, बागीश्वरी त्वचा की ॥
श्री पार्वती रक्षा करो, रक्त, मज्जा, वसा की ।
मांस, हड्डी, मेदे की, और मां हर दशा की ॥
आंतों की रक्षा करना मां कालरात्री ।
पित्त की रक्षा करना मुकटेश्वरी मातृ ॥
मूलाधार आदि पद्मकोशों की,रक्षा करना मां पद्मावती
चूड़ामणि कफ की, नखों के तेज की ज्वालामुखी ॥
शरीर के जोड़ों की अमेद्या देवी, ब्रह्मी वीर्य की।
छत्रेश्वरी मां छाया का, हर दिशा का ध्यान भी धरना॥
मन, अहंकार, बुद्धि पे धर्मधारिणी मां ध्यान धरो ।
मेरे प्राण, अपान, ब्यान की, बज्रहस्ता देवी रक्षा करो॥
उदान, समान की रक्षा करना, ऐ मां भाग्यविधाता ।
दीर्घ आयु देना मुझको, सर्व सुखों की दाता ॥
रस, रूप, गंध, शब्द, स्पर्श में, संग रहना योगिनी देवी।
सत्वगुण, रजोगुण, तमोगुण की रक्षा करो नारायणी देवी
आयु की रक्षा करना मां बारिही ।
वैष्णवी धर्म की रक्षा करना मां सदा ही ।।
चक्रिणी देवी यश, कीर्ति,धन,विद्या की लक्ष्मी कल्याणी।
पशुओं की मां चण्डिके, गोत्र की रक्षा करना इन्द्राणी॥

संतान की महालक्ष्मी, भैरवी पत्नी पे मां दया दिखाना।
सुपथा मार्ग सरल बनाना, क्षेमकरी विपत्तियाँ हटाना ॥
महालक्ष्मी मां दरबार में मेरा, मान-सम्मान बढ़ाना ।
विजया देवी रक्षक बनना, सम्पूर्ण मेरे भय मिटाना ॥

दोहा

कवच में भूल से मातेश्वरी, कोई स्थान रहा हो शेष।
विजयशालिनी, पापनाशिनी, रक्षक बनना मां हमेश ॥

*

मानव को चाहिए यही, बिन कवच न पग उठाय ।
यात्रा पूर्व मङ्गलकारी वह, कवच का पढ़े अध्याय ॥

*

कवच से मिटे जीवन के सब रोग ।
विष होते दूर सब सदा रहे मानव निरोग ॥
यन्त्र, मंत्र कर सकें न अनिष्ट ।
जल, थल के भूत-प्रेत करे यह ध्वस्त ॥
कवच के नित्य पाठ से, रहे मनुष्य सुरक्षित ।
अन्न-धन, लाभ, पूर्ण हो कामना, वस्तु मिले लक्षित॥
राज्य दरबार में मिले सदा सम्मान ।
उन्नति-तेज़ बढ़ा कर मां सदा करे कल्याण ॥

दोहा

दुर्गा सप्तशति के पाठ से पूर्व, कवच जो पढ़े सुनाय।
देवों को दुर्लभ जो, वोह मर कर भी परमपद पाय ॥

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

अथ अर्गला स्तोत्र

नमस्कार जयन्ती, मङ्गला, काली,
जय कपालिनी, मां भद्रकाली,
दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री,
स्वाहा, स्वधा, सुखदात्री,
वन्दन करें हम सब प्रकार ।
रूप, जय, यश दो मां अपार,
दुष्टजनों का करो संहार .....

जय जगदम्बिके, चामुण्डा माता,
सर्वव्यापिनी, जय कालरात्री सुखदाता,
मधुकैटभ का संहार था कीना,
ब्रह्मा जी को वर था दीना,
नमन करे है सब संसार ।
रूप, जय, यश दो मां अपार,
दुष्टजनों का करो संहार .....
महिषासुरमर्दिनी जय मां,
रही जगत में आप अजय मां,
रूप, जय, यश की हो दाता,
शत्रु आप से भय को पाता,
तुम्हरी महिमा अपरम्पार ।
रूप, जय, यश दो मां अपार,
दुष्टजनों का करो संहार .....
शुम्भ, निशुम्भ, धूम्राक्ष मारे,
रक्तबीज, चण्डमुण्ड संहारे,
भयनाशिनी भय मिटाओ,
चिन्ता से हमें मुक्त कराओ,
विनती करें हम बारम्बार ।
रूप, जय, यश दो मां अपार,
दुष्टजनों का करो संहार .....

प्रार्थना करें हम द्वार तिहारे,
परम सौभाग्य करें हमारे,
श्रद्धाभाव जो आपको पूजें,
कष्टों से वे कभी न जूझें,
स्वास्थ्य, धन दो हमें अपार ।
रूप, जय, यश दो मां अपार,
दुष्टजनों का करो संहार .....
काम, क्रोध, लोभ, मोह,
अहंकार को मारें,
दया-दृष्टि अब हम पे डारें,
अचिन्तनीय रूप, चरित्र वाली,
भगतों के दुःख हरने वाली,
हमरे करना शुद्ध विचार ।
रूप, जय, यश दो मां अपार,
दुष्टजनों का करो संहार .....
कल्याण करो मां हे कल्याणी,
तुम्हीं हो उत्तम सम्पत्ति प्रदायिणी
सौभाग्य, अरोग्य का वर पाएं,
भगती सहित स्तुति में गाएं,
वन्दन हमरा करो स्वीकार ।
रूप, जय, यश दो मां अपार,
दुष्टजनों का करो संहार .....

द्वेषी का भी नाश करो मां,
मन में सदा निवास करो मां,
धन–वैभव, सुख–चैन मां दीजो,
भगतजनों को शरण में लीजो,
शरणागत हैं करो उद्धार, ।
रूप, जय, यश दो मां अपार,
दुष्टजनों का करो संहार .....
देव व दानव दोनों आकर,
मुकुटमणि चरणों में घिसाकर,
आपको मैया शीश निवाते,
मुक्ति की यूं युक्ति पाते,
आप हैं सबकी प्राण–आधार ।
रूप, जय, यश दो मां अपार,
दुष्टजनों का करो संहार .....
यशस्वी, मां लक्ष्मीवान बनाओ,
विद्वता का मां पाठ पढ़ाओ,
दैत्यों का था घमण्ड मां तोड़ा,
पापियों को न कहीं का छोड़ा,
हमें भी कर दो भव से पार ।
रूप, जय, यश दो मां अपार,
दुष्टजनों का करो संहार .....
ब्रह्मा जी प्रशंसित परमेश्वरी माता,
शिवजी स्तुतित हे जगमाता,
विष्णु जी ने जिसको पूजा,

जगदम्बिके आप थीं न कोई दूजा,
शचीपति इन्द्र की थी यही पुकार ।
रूप, जय, यश दो मां अपार,
दुष्टजनों का करो संहार .....
श्रेष्ठ कुलोत्पन, गुणी पत्नि को पाएं,
परमानन्द, मोक्ष को गले लगाएं,
पग-पग सुख के पुष्प खिलाएं,
आपकी दया से परम-सुख पाएं,
जब भी करें, करें उपकार ।
रूप, जय, यश दो मां अपार,
दुष्टजनों का करो सहार .....

दोहा

अर्गला स्तोत्र का पाठ कर,
जो सप्तशती पढ़े-सुनाय ।
सप्तशती जपसंख्या का फल,
'शौकी' सुख-सम्पत्ति वर पाय ॥

॥ इति श्री अर्गला स्तोत्र सम्पूर्ण ॥

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

अथ श्री कीलक स्तोत्र

महर्षि श्री मार्कण्डेय जी वचन उचारा ।
अर्द्ध-चन्द्रधारी, दिव्यनेत्रयुक्त शिव को नमस्कारा ॥
कीलक स्तोत्र है परम फलदायक ।
ऋद्धि-सिद्धि सुख का परिचायक ॥

इस स्तोत्र से करे जो स्तुति ।
पुण्य फल मिले तब अद्वितीय ॥
शिवशंकर ऋषियों से कहते ।
हानि न हो इसके रहते ॥

चण्डिका स्तोत्र को गुप्त फिर कीना ।
गुणीजन को ही वर यह दीना ॥
विधिपूर्वक पढ़े जो कोई ।
सर्वसिद्धि को पाए सोई ॥

चतुर्दशी हो या हो अष्टमी ।
वह भी हो कृष्ण पक्ष की ॥
एकाग्रचित हो जो होता अर्पित ।
सर्वस्व मां को करे समर्पित ॥

प्रसाद ले मां से करे निर्वाह ।
उसी पे प्रसन्न हो मां दुर्गा अथाह ॥
अकारण मौत के मुंह न जाय ।
मृत्यु उपरान्त भी मोक्ष को पाय ॥
कीलक विधि को समझकर पाठ करे जोई ।
सौभाग्य, आरोग्य, समृद्धि पाता सोई ॥
अनजाने में पाठ से हानि ही होय ।
निष्फल होता पाठ भी विनाश की शंका होय ॥
स्त्रियों में धर्म-कर्म जो सौभाग्य आए ।
मां भगवती के प्रसाद से ही वह गुण पाए ॥
स्पष्ट, सुन्दर, उच्च स्वर में पाठ करे जो ।
धन-धान्य ऐश्वर्य, सम्पति भण्डार भरे वो ॥
शत्रु नाश करे, दे माता मुक्ति ।
परम-मोक्ष की मिलती युक्ति ॥
देवी की स्तुति सदा कल्याणकारी ।
भगतजन का करे उद्धार, वोह पर-उपकारी ॥

॥ श्री दुर्गायै नमः ॥

अथ श्री दुर्गा सप्तशती

त्रैलोकी की मालक मां, सर्व सुखों की खान ।
सफल करो प्रयास मां मेरा, देकर ज्ञान वरदान ॥

पहला अध्याय

मेधा ऋषि का राजा सुरथ तथा समाधि को मां भगवती की महिमा का वर्णन करते हुए मधु-कैटभ के वध का प्रसंग सुनाना

***

महाकाली भगवती को नमस्कारा ।
मधु-कैटभ का जिस किया संहारा ॥
वन्दनीय जो श्री ब्रह्मा जी की ।
वन्दना करूं, सर्वप्रथम मैं माता जी की ॥

खड्ग, चक्र, गदा, धनुष–वाणधारी ।
त्रैनेत्री मां आभूषण – धारी ॥
परिध, शूल, भुशुण्डी धरनी ।
मस्तक, शंख जग पालनकरनी ॥
दस पांव, दस मुखों वाली ।
मणि समान अंग सब सुखों वाली ॥
श्री मार्कण्डेय ऋषि कथा बताते ।
सुरथ राजा की व्यथा सुनाते ॥
स्वारोचिष मन्वन्तर चैत्रवंशी भूलोक के राजा ।
सुरथ राजा नाम था ताका ॥
धर्मरक्षक थे प्रजा के परम हितैषी ।
प्रतिभा न थी तब उनके जैसी ॥
फिर विपत्ति का समय था आया ।
यवन राजाओं ने उन्हें हराया ॥
राजा सुरथ लौट जब नगर में आए ।
तब अपनों ने जाल बिछाए ॥
कोष, राज्य, महल को लूटा ।
राजा का तब धैर्य टूटा ॥
हार जाए जब कोई तन से ।
कर्म न होता फिर तो मन से ॥
वन जाने का मन बनाया ।
घोड़े पर चढ़ वन में आया ॥

वन में स्थान दिखा रमणीका ।
आश्रम था वह ऋषि मेधा जी का ॥
सुरथ किया वहां विश्राम विचार ।
मेधा ऋषि से हुआ साक्षात्कार ॥
ठहरा वहां, पर मन न ठहरा ।
घाव था मन में दुःख का गहरा ॥
आखिर था वह भी संसारी ।
मोहमाया थी इक लाचारी ॥
सोचे सहेगी प्रजा दुःख भारी ।
नीच कार्य करेंगे दुराचारी ॥
मेरा धन मेरे काम न आया ।
अति दीन अवस्था पहुंचाया ॥
स्व-जनों ने सब कुछ छीना ।
विरहा का दुःख मुझको दीना ॥
चिन्ता खड़ी थी घेरे घोर ।
तभी एक वैश्य आया उस ओर ॥

दोहा

कौन हो तुम ऐ अजनबी, अपनी कथा सुनाय ।
मलिन मुख क्यों भययुक्त, क्या चिंता तुझे सताय ?
प्रेम वचन सुन राजन के, अजनबी खड़ा कर जोड़।
व्यथा लगा सुनाने, क्यों भागा नाते तोड़ ॥

समाधि नाम का वैश्य, जन्म से ही हूं धनवान ।
मिलता था समाज में, मुझे बड़ा ही मान–सम्मान ॥
विधि ने फिर डाला घेरा ।
हुआ बेगाना जो था मेरा ॥
दुष्ट स्त्री, पुत्र ने लिया सब छीन ।
कल का धनी बना अति दीन ॥
करके कंगाल मुझे दिया निकाल ।
कल था धनवान आज हुआ बेहाल॥
उन्हीं को जिन्होंने छीना चैन ।
ना जाने दिल क्यों इतना बेचैन ॥
मार्कण्डेय ऋषि जी कथा सुनाएं ।
उन दोनों की व्यथा सुनायें ॥

दोहा

मेधा ऋषि की सेवा में, उपस्थित हुए वे जाय ।
आग्रह किया करो कुछ ऐसा, मन स्थिर हो जाय ॥

*

हमरा मन नहीं स्थिर है मुनिवर ।
अपनों ने किया अस्थिर मुनिवर ॥
निज बन्धुओं से नाता तोड़ा ।
बहुत दूर है जिनको छोड़ा ॥
अपमानित होकर जिनसे भागे ।
मन में अब तक क्यों विराजे ॥

मुनिश्रेष्ठ करो कोई ऐसा यत्न ।
ठण्डी हो जाये मन की अगन ॥
प्रेम-पूर्वक मुनि ने उन्हें बिठाया ।
जलादि का पान कराया ॥
आरम्भ हुआ था तब व्याख्यान ।
करने लगे सब अमृत पान ॥
करने लगे समस्या का समाधान ।
जीवों में जो भरा अज्ञान ॥
भगवती की माया का चमत्कार ।
ममता व्यूह में फंसा संसार ॥
भगवान विष्णु की योगनिद्रा रूपी महामाया ।
जिसने सारा जग भरमाया ॥
ज्ञानी भी इससे बच न पाये ।
जितना भागे उतना फंस जाये ॥

दोहा

जगजननी वह जगत की, उसके ही विधि-विधान ।
करे करावे आप वो, न समझे नर नादान ॥

☆

राजा सुरथ पूछें ऋषिवर ।
और प्रकाश डालें महामाया पर ।
उनकी उत्पत्ति और क्या हैं प्रभाव ।
चरित्र और स्वरूप बतायें आप ॥

ऋषि बोले वह देवी नित्यस्वरूपा ।
समस्त विश्व में वोह कई रूपा ॥
सिद्धि से है जन्म वह लेती ।
भगतों की दुविधा हर लेती ॥
कल्पांत संसार था जलमय ।
योगनिद्रा में थे विष्णु उस समय ॥
उत्पन्न हुए कर्ण मैल से मधु-कैटभ असुर।
ब्रह्मा जी का वध करने को थे आतुर ॥
ब्रह्मा जी ने योगनिद्रा की स्तुति कीनी ।
स्वाहा, स्वधा को प्रार्थना कीनी ॥
वषट्कार स्वर तुम्हीं अर्ध मात्रा ।
हे संध्या, सावित्री, जननी माता ॥
आप ने धारण कर रखा संसार ।
आप विश्व की प्राण-आधार ॥
आपसे विश्व की उत्पति, पालन व संहार ।
महाविद्या, महामाया आप दातार ॥
महामेधा, महास्मृति, महामोहरूपा ।
महादेवी, महासुरी, त्रिगुणरूपा ॥
महाकालरात्रि, महारात्रि, श्री, मोहरात्रि ।
ईश्वरी, बुद्धि, लज्जा मातृ ॥
शान्ति, क्षमा आप ही पुष्टि ।
आप ही कहलायें तुष्टि ॥

सत्–असत् वस्तुओं में आपकी शक्ति ।
ऐसी अवस्था में कैसे हो आपकी भक्ति ॥
ब्रह्मा, विष्णु, शिव हैं प्रगटाये ।
आपकी महिमा कही न जाये ॥
असुर मधु–कैटभ को मोह में डालो ।
जगाकर विष्णु जी को मुझे बचा लो ॥

दोहा

ऋषि कहते राजन सनो,
तमोगुण की अधिष्ठात्री हुई दयाल ।
विष्णु जी के नेत्र, मुख, नाक,
भुजा, छाती से प्रगटी तामसी देवी कृपाल ।

*

जगतस्वामी विष्णु भगवान जी,
शेषशैय्या से गए तब जाग ।
देखते हैं मधु, कैटभ असुर,
उगल रहे थे आग ॥

*

सब स्थिति पे नज़र दौड़ाई ।
मधु–कैटभ को आवाज़ लगाई ॥
ब्रह्मा जी को न धमकाओ ।
लड़ना है तो इधर को आओ ॥

ब्रह्मा जी हैं अंश हमारे ।
देखूं बाहुबल मैं तुम्हारे ॥
बाहुयुद्ध था छिड़ा अचानक ।
धरा रूप था अति भयानक ॥
पांच हज़ार वर्ष युद्ध था कीना ।
तामसी ने उन्हें मोहित कर दीना ॥
तब देवी ने असुर भरमाये ।
उन दोनों में अभिमान जगाये ॥
घमण्ड में बोले हे भगवान् ।
मांग लो हमसे कोई वरदान ॥
तब बोले श्री भगवान् ।
इतना कहा लो मेरा मान ॥
मेरे ही हाथों मारे जाओ ।
प्रसन्न हो तो वचन सुनाओ ॥
वचन-बंधों ने वचन उचारा ।
जहां न जल हो करो वध हमारा ॥
जांघ पे लिया प्रभु लिटाये ।
जल न था वहां दिख पाये ॥
सुदर्शन चक्र से किया फिर वार ।
दोनों असुरों का किया संहार ॥
ब्रह्मा जी द्वारा स्तुतित जैसे मां आई ।
भगतों पे भी मां होना सहाई ॥

दोहा

सुनो ऋषिवर ध्यान से, कहा जो प्रथम अध्याय ।
चिंता होगी दूर फिर, पढ़े जो मनचित्त लगाय ॥

☆

शक्तिशाली शत्रु भी न, कष्ट कभी पहुंचाय ।
भयनाशिनी भय हरे, सुख-सुविधा बरसाय ॥

श्री मार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'मधु-कैटभ-वध' नामक पहला अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।

दूसरा अध्याय

देवताओं के तेज से देवी का प्रादुर्भाव तथा महिषासुर सेना का नाश

मेधा ऋषि वृत्तांत सुनायें ।
देव-असुर युद्ध वर्णन बतलायें ॥
सौ वर्ष हुआ घोर संग्राम ।
हाहाकार मची तब चारों धाम ॥

दैत्य सेना हो गई भारी ।
देव सेना लगती थी हारी ॥
स्वर्गलोक देवों ने त्यागा ।
इन्द्र भी देवों संग भागा ॥
ब्रह्मा जी को व्यथा सुनाई ।
लाचारी की सब ने कथा सुनाई ॥
ब्रह्मा, शिव गए सागर क्षीर ।
विष्णु भी सुन हुए अधीर ॥
तीनों ने मिल कर किया विचारा,
महिषासुर से हो कैसे छुटकारा ॥
देवताओं ने अर्ज़ गुजारी ।
रखियो प्रभुवर लाज हमारी ॥
विष्णु, शंकर, ब्रह्मा हुए विकला ।
तीनों के मुख से तेज था निकला ॥
इन्द्रादिक भी हुए क्रोधित ।
मुख से निकला तेज अलौकिक ॥
सभी ने उसे विचित्र माना ।
दृढ़ हुआ सुमेरू पर्वत समाना ॥
तेज-समूह बना शक्ति स्वरूपा ।
बनता गया फिर आकृति रूपा ॥
शिव के तेज ने मुख बनाया ।
यम के तेज ने केश सजाया ॥

विष्णु के तेज ने भुजाएं दीनीं ।
चन्द्रमा के तेज ने स्तन जड़ दीनीं ॥
इन्द्र के तेज से कटि भाग बना था ।
वरुण के तेज से जांघ सजा था ॥
कुबेर के तेज ने नितम्ब बनाए ।
ब्रह्मा के तेज ने चरण सजाए ॥
सूर्य ने अंगुलियां पांवों की बनाई ।
वसुओं ने हाथ की अंगुलियां सजाई ॥
कुबेर तेज से नासिका साजी ।
प्रजापति तेज से दंत-लड़ी लागी ॥
अग्नि के तेज ने त्रेनेत्र लगाये ।
मां की शोभा वरणी न जाए ॥
सन्ध्याओं ने भौंह किये प्रदान ।
पवन ने दिये मां के कान ॥
आदिशक्ति का हुआ तब प्रादुर्भाव ।
देवों में प्रकटे खुशी के भाव ॥
शिव भोले ने त्रिशूल दीना ।
विष्णु भगवान् चक्रपुक्त कीना ॥
वरुण ने शंख अग्नि ने शक्ति ।
वायु ने वाण, धनुष के दिए तरकश ॥
सुर-राज इन्द्र ने बज्र से बज्र निकाला ।
एरावत हाथी घंटा दिया तत्काला ॥

काल ने दण्ड, वरुण ने पाश ।
दक्ष प्रजापति ने अक्षमाल ॥
ब्रह्मा ने कमण्डल, सूर्य ने तेज निकाला ।
काल ने खड्ग दिया चमकीला ढाला ॥
क्षीर सागर ने दिया मुक्ता हार ।
दिव्य वस्त्र, जूड़ामणी, कर्मफूल से किया श्रृंगार ॥
हाथों के कंगन दिए अर्द्धचंद्र ।
पगों की पायजेबें भुजा के बाजूबंद ॥
गले में धारण की सुन्दर हंसली ।
रतन जड़त दी अंगूठियां भी ॥
विश्वकर्मा ने दिये फरसा, अस्त्र-शस्त्र ।
पहना दिया था कवच का वस्त्र ॥
समुद्र ने कमल, पुष्प किए अर्पित ।
हिमालय ने केसरी सिंह किया समर्पित ॥
अनेक प्रकार के रत्न भी किए प्रदान ।
कुबेर ने मदिरा भर दिया पात्र-पान ॥
शेषनाग ने दिया, नागमणियों का हार ।
अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित,सम्मानित मां हुई तैयार ॥
तब पहले हंसी फिर, घोर किया अट्टहास ।
सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड गूंज उठा, कांपे धरती आकाश ॥

दोहा

देवताओं ने सिंहवाहिनी की, कीनी जय जयकार ।
ऋषि, मुनियों ने स्तुति की, मां की बारम्बार ।

★

महिषासुर दौड़ा तभी ।
हुआ भयंकर शब्द जभी ॥
देवी से आसुर तब लड़ने लागे ।
दश दशाओं में फैले तेज से कुछ तो भागे ॥
महाबली, चिक्षुर, चामर राक्षस लड़ने को आए ।
उदग्र, महाहनु हाथी, सेना रण में जाए ॥
असिलोमा, वाष्कल ने भी युद्ध कीना ।
बिडाल दैत्य रथों सहित लड़ दीना ॥
महादैत्य महिषासुर भी रण में आया ।
ज्योतिस्वरूप मां ने जौहर दिखाया ॥
तोमर, भिन्दिपाल, लाठी फैंके भाले ।
शक्ति ने मूसल, खड्ग से कई मार डाले ॥
फर्सा, किरच करने लगे प्रहार ।
होने लगा दैत्य सेना का संहार ॥

काट रही थी मां दैत्यों के शस्त्र ।
सम्भाले हुए थी मां अपने अस्त्र ॥
सिंह भी बना था असुरों का काल ।
तब मां अम्बिका ने स्वास छोड़े तत्काल ॥
हज़ारों गण बन रण में दौड़े ।
किसी दैत्य को न जीवित छोड़े ॥
महामाया का रूप देख मूर्छित हो मर गये ।
घायल हो कितने ही डर गए ॥
देवी ने अस्त्रों की फिर वर्षा कीनी ।
पृथ्वी ही शस्त्रों से ढक दीनी ॥
होने लगा असुरों का सर्वनाश ।
देवों ने ली तब सुख की सांस ॥
प्रसन्नचित्त वरसा रहे थे फूल ।
दुःख की छटी थी मुख से धूल ॥

श्रीमार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'महिषासुर सेना का वध' नामक दूसरा अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।

तीसरा अध्याय

महिषासुर वध

मेधा ऋषि बैठे थे शिष्यों संग ।
सुरथ राजा को सुनायें प्रसंग ॥

सुनो राजा मैं कथा सुनाऊं ।
महिषासुर का अन्त दरसाऊं ॥
सेना का देख चिक्षुर संहार ।
रण में जाने को हुआ तैयार ॥
उसके कराल वाणों को मां ने तोड़ा ।
जिधर से आई सेना उधर को मोड़ा ॥
सारथी एवं घोड़ों का वध कर दीना ।
चिक्षुर को वाणों से घायल था कीना ॥
जगदम्बा ने चिक्षुर को मार गिराया ।
देख देवों का मन हरषाया ॥
चामर हाथी को सिंह ने ऐसे मारा ।
रुकते बनी न रक्त की धारा ॥
भिन्दिपाल से वाष्फल को मारा ।
ताम्र, अन्धक को वाणों से संहारा ॥
उग्रास्य, उग्रवीर्य, महाहनु पछाड़े ।
विडाल, दुर्धर, दुर्मुख भी मारे ॥
तब महिषासुर भैंसे पर आया ।
देवी-गणों को भय दिखलाया ॥
दैत्य ने शोर किया भयंकर ।
पृथ्वी कांपी उड़े थे कंकर ॥
चण्डिका देवी तब क्रोध में आई ।
जग में मानों प्रलय छाई ॥

महिषासुर पर पाश को फैंका ।
बंधकर शेर बन गया भैंसा ॥
देवी दौड़ी लेकर तलवार ।
मनुष्य बना वह लिये कटार ॥
मां ने जब था उसे ललकारा ।
उसने हाथी रूप था धारा ॥
सिंह को पकड़ सूंड से खींचा ।
केसरी को था उस पल भींचा ॥
सूंड पे चली थी जब तलवार ।
महिषासुर लिया भैंसा रूप धार ॥
सींगों से पर्वत फैंकन लागा ।
क्रोध था रग-रग में जागा ॥
व्याकुल हो गए सब ही प्राणी ।
रण में हुई थी भारी हानि ॥
ऋषिवर कथा सुनाते जायें ।
महिषासुर के वध का वृत्तांत बतलायें ॥
देवी ने महिषासुर का सीस दबाया ।
ऊपर से त्रिशूल चलाया ॥
बनने लगा था फिर वह मानव ।
तलवार की भेंट किया मां दानव ॥
हाहाकार मची तब रण में ।
दैत्य सेना भागी क्षण में ॥

दैवों ने माना मां का आभार,
महार्षियों संग की जय-जयकार ।
गन्धर्वराज किया था गायन,
अप्सराएं नृत्य थीं करने लागन ॥

श्रीमार्कण्डेय पुराण सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'महिषासुरवध' नामक तीसरा अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।

चौथा अध्याय

इन्द्र आदि देवताओं द्वारा मां जगदम्बा की स्तुति

दुष्टात्मा महिषासुर दैत्य बलशाली,
देवों ने उससे मुक्ति पा ली ।
ऋषिवर कथा का वर्णन कीना,
देवों का जिसने कष्ट हर लीना ।
इन्द्रादिक देव हुए प्रसन्न,
कहें मां हो आप धन्य ।
किया है हमरा जिसने कल्याण,
ऐसी जगदम्बिका को हो प्रणाम् ।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश जी ध्यावें,
मनवांछित वो फल को पावें ।

स्तुति

हमरा प्रणाम स्वीकारो मैया,
हर विपत्ति से उबारो मैया .....
सम्पूर्ण विश्व की रक्षादायिनी,
त्रिगुणमयी मां वरदायिनी ।
चण्डिका देवी विश्व की पालक,
अशुभ, भय की आप हो नाशक ।
पुण्यात्मा आप हो लक्ष्मी रूपा,
पापियों को हो दरिद्र स्वरूपा ।
समस्त यज्ञों में मंत्र रूप,
आदि शक्ति परम प्रकृत अनूप ।
मुनिजन आपके हैं गुण गाते,
मुक्ति की युक्ति वर में पाते ।
हमरे भाग्य संवारो मैया,
हर विपत्ति से उबारो मैया .....
महिषासुर वध किया कल्याणी,
शरणागत के उद्धार की ठानी ।
जिन पर होती प्रसन्न हैं आप,
कष्ट, रोग मिटे संताप ।
दुःखी मनुष्य जो शरण में आता,
भयरहित हो परम सुख पाता ।
आप सा कौन है मां उपकारी,
हम भी आए शरण तिहारी ।

त्रिशूल, खड्ग से रक्षा करना,
विनती पे अब ध्यान मां धरना ।
बेटा कह पुकारो मैया,
हर विपत्ति से उबारो मैया .....
त्रैयलोकवासिनी सुख की दाता,
सर्व दिशा करो रक्षा माता ।
आपसे देवता वर मां चाहते,
ऋषि, पितृगण तृप्त हो जाते ।
इसी कारण स्वधा रूप हो,
देव प्रसन्न करे स्वाहा स्वरूप हो ।
मुनिजन, गुणीजन करें है स्तुति,
देवि आप तो जग में अद्वितीय ।
सुगंधित धूप मां पुष्प सजाएं,
देवगण मां के द्वारे गाएं ।
कृपा दृष्टि मारो मैया,
हर विपत्ति से उबारो मैया .....

***

प्रसन्न हुई भक्ति से मां देवा,
हुई स्वीकार उनकी सेवा ।
देवि हुई मां अति प्रसन्न,
देव हुए दर्शन पा धन्य ।
मांग लो कुछ भी अब वरदान,
मुश्किल करूँगी सब आसान ।

देवता बोले सब कुछ पाया,
इतनी कृपा करना महामाया ।
जैसे भय से मुक्ति दीनी,
महिषासुर से रक्षा कीनी ।
हे मातेश्वरी ! जब आपत्ति आए,
जब-जब स्मरण से कोई बुलाए ।
दर्शन देकर दुःख दूर मां करना,
धन, ऐश्वर्य से भरपूर मां करना ।

दोहा

ऋषिवर कहें राजन सुनो,
माता 'तथास्तु' वचन सुनाया ।
समस्त जग-कल्याण का,
देवतागण ने वर था पाया ॥

सच्चे मन जो भक्ति को धारें ।
श्रद्धाभाव से नाम उचारें ॥
कोई कमी न मां दरबारा ।
वहां तो बहती सुख की धारा ॥

श्रीमार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवी माहात्म्य में 'शक्रादिस्तुति' नामक चौथा अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।

पांचवां अध्याय

देवताओं द्वारा मां की स्तुति, चण्ड-मुण्ड के मुख से अम्बिका के रूप की प्रशंसा सुनकर शुम्भ का उन के पास दूत भेजना और दूत का निराश लौटना ।

शुम्भ-निशुम्भ प्राक्रमी असुर थे दो ।
इन्द्र से राज्य, यज्ञ भाग छीन चुके थे वो ॥
सूर्य, चन्द्र से अधिकार लिये छीन ।
धर्म राज, वरुण हो गए थे दीन ॥
वायु, अग्नि हो गए भयभीत ।
स्वर्गलोक में हुई आसुरों की जीत ॥
देवों ने विचार था कीना ।
भययुक्त होकर क्या जीना ॥

दोहा

अपराजिता देवी का स्मरण किया, तब देवों ने जाय।
आपत्ति मां है आन पड़ी, उलझन दो सुलझाय ॥

*

देवों ने मां को किया नमस्कार,
हमरी व्यथा-कथा सुनो प्राणाधार ।
हमरी पीड़ा का न है पार,
हमरा करो मां आ उद्धार ।

नमस्कार मां बारम्बार

राजगृहों में लक्ष्मी रूपी
व शर्वाणी देवी नमस्कार ।
नमस्कार मां बारम्बार .....
दुर्गपारा, सारा, सर्वकारिणी ख्याति,
धूम्र स्वरूपा नमस्कार ।
नमस्कार मां बारम्बार.....
प्राणियों में वृत्तिरूपा, स्मृति रूपा नमस्कार ।
नमस्कार मां बारम्बार .....
दया, रूप, तुष्टिरूप में
विद्यमान मां नमस्कार ।
नमस्कार मां बारम्बार .....
जीवधारियों में भ्रान्तिरूपा,
इन्द्रियवर्ग की अधिष्ठात्री नमस्कार ।
नमस्कार मां बारम्बार .....
समस्त संसार में चैतन्य रूप से,
व्याप्त मां नमस्कार ।
नमस्कार मां बारम्बार .....

दैत्यों से पीड़ित हम शरण में आए ।
मातेश्वरी आप से आस लगाये ॥
संकट हरो हमारा मैया ।
विपत्ति में दो सहारा मैया ॥
हमरा प्रणाम हे मां स्वीकारो ।
दुःख-दुविधा से हमें उबारो ॥
तब गंगाजल में स्नान को पार्वती जी आयीं ।
शरीर कोश से शिवा देवी प्रगटायीं ॥
कौशिकी रूप मां ने धारा ।
पार्वती जी धरा कालिका अवतारा ॥
मां बनी परम मनोहर रूपा ।
चण्ड, मुण्ड ने देखा वह रूप अनूठा ॥
शुम्भ, निशुम्भ से वर्णन कीना ।
मां के रूप का सब वृत्तान्त था दीना ॥
असुरेश्वर ! कन्या न जाने कहां से आई,
बुद्धि हमरी समझ न पाई ॥
प्रकृति की वह लगती जन्या ।
आपके युक्त है वह तो कन्या ॥
सब दिशा प्रकाश फैलाया ।
असुरराज, है अद्‌भुत उसकी माया ॥
शुम्भ ने तब था किया विचार ।
सुग्रीव को भेजने को किया तैयार ॥

कन्या को लाने की आज्ञा दीनी ।
सुग्रीव ने मां से जाकर बात कीनी ॥
तीनों लोगों में अजेय हैं मेरे स्वामी ।
बलवान जगत में हैं वे नामी ॥
अधीन हैं जिसके देव भी सारे ।
उत्तम रत्न जो रहते धारे ॥
चंचलनेत्री शरण में आओ ।
निशुम्भ के महल की शोभा बन जाओ ॥
निशुम्भ हैं सबके ऐश्वर्यदाता ।
सुख-सम्पत्ति के वो प्रदाता ॥
ऋषिवर आगे वृत्तांत सुनाएं ।
मां की महिमा को दृष्टायें ॥
भगवती भद्रा हुई गंभीर ।
दूत भी सुनने को हुआ अधीर ॥
शुम्भ-निशुम्भ की मां ने प्रशंसा कीनी ।
अपनी प्रतिज्ञा भी रख दीनी ॥
वह ही मुझ से नाता जोड़े ।
संग्राम में मेरा मान जो तोड़े ॥
उसी का होगा यहां स्वागत ।
करेगा मुझे जो भी पराजित ॥
दूत बोला सुन री अभिमानी ।
शुम्भ-निशुम्भ की तूने शक्ति न जानी ॥

त्रैलोकी में वो हैं अजय ।
इन्द्रादिक किये देव विजय ॥
परम पराक्रमी वे बलशाली ।
तीन लोक के अब वे वाली ॥
हो गई लगती तुम्हें है भ्रांति ।
सामना करोगी तुम किस भांति ॥
शुम्भ-निशुम्भ हैं भले ही बलवान ।
देवी कहे ऐ सुन नादान ॥
मैं तो हूं अब प्रतिज्ञाबद्ध ।
जा नहीं सकती उसके विरुद्ध ॥
असुरराज से कहना जाकर ।
संग्राम करे वो पहले आकर ॥
उचित जो समझें वही करें वो ।
मुझे चाहें तो आय लड़ें वो ॥
जाकर मेरा संदेश दे देना ।
उनके हाथ है जो फैसला लेना ॥

श्री मार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'देवी-दूत-संवाद' नामक पाँचवाँ अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।

छठा अध्याय

धूम्रलोचन-वध

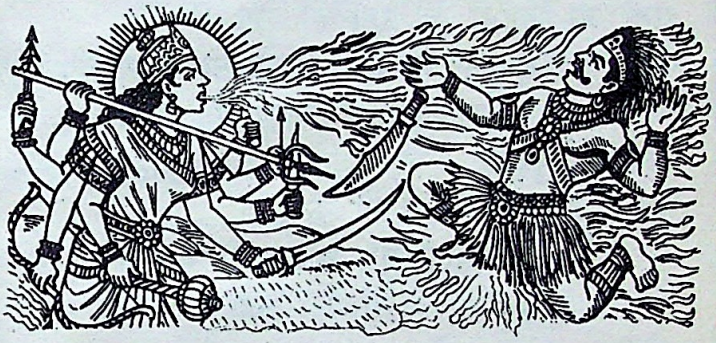

दोहा

ऋषि बोले विवरण सुन, क्रोधित हुए दैत्यराज ।
ये कन्या आई कहां से, चुनौती दी जिसने आज ।

धूम्रलोचन को तब तैयार कीना ।
घसीट लाओ कन्या को आदेश दीना ॥
देवगण यदि बीच में आए ।
जो भी आए बच न पाए ॥

परिस्थितियों का किया विवेचन ।
सेना लेकर चला धूम्रलोचन ॥
देवी को जाकर ललकारा ।
तुरन्त चलो आदेश दे डाला ॥
दैत्येश्वर का यही आदेश ।
वहीं जा कहना जो रहा हो शेष ॥
उनसे जो चाहो सो पाओ ।
शीघ्र करके शरण में जाओ ॥
करोगी मुझसे जो क्लेश ।
पकड़ ले जाऊँगा मैं तो केश ॥
मां बोली तुम योद्धा हो बलवान ।
बल दिखाओ जांऊ जान ॥
क्रोधित धूम्रलोचन आगे दौड़ा ।
हुंकार से अम्बिका ने भस्म कर छोड़ा ॥
असुर सेना फिर आगे आई ।
मां ने वाणों की झड़ी लगाई ॥
कितनों ने ही श्वास को छोड़ा ।
सिंह ने कईयों का सिर फोड़ा ॥
धराशयी हो गई लगी न देर ।
हो गई असुर सेना थी ढेर ॥
शुंभ ने जब विवरण यह जाना ।
चण्ड-मुण्ड को भेजना ठाना ॥

कैसे भी हो कन्या को लाओ ।
न माने तो उसे हराओ ॥
शव ही लेकर वापिस आना ।
सिंह को लाना भूल न जाना ॥
जाओ सेना को ले जाओ ।
विजयी होने की खबर सुनाओ ॥

श्री मार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'धूम्रलोचन-वध' नामक छठा अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।

सातवां अध्याय

चण्ड और मुण्ड का वध

चण्ड-मुण्ड धारण किए हथियार ।
रण में पहुंचे आज्ञानुसार ॥
हिमगिरी शिखर मां सिंह असवार ।
जिसके तेज का न था पार ॥
चण्ड-मुण्ड दौड़े देवी को पकड़ने ।
ले जाने को तत्पर जकड़ने ॥
क्रोधित हुई अम्बिका महामाया ।
श्याम रंग का रूप बनाया ॥

नरमुण्डों की माला पहनी ।
भयंकर रूप बनी सिंहवाहिनी ॥
प्रगटी विकराल मुखी मां काली ।
सेना से एक ही लड़ने वाली ॥
हाथी घोड़े रथ सारथी ।
सबको थी मां मुंह में डालती ॥
अस्त्र सभी के किए थे चूर्ण ।
अकेली ही लड़ने में परिपूर्ण ॥
सेना का होता देख विनाश ।
चण्ड आया क्रोधित हो पास ॥
देवी पर चक्र बरसाए ।
रण में कुछ भी दीख न पाए ॥
महामाया ने किया अट्टहास ।
क्रोधपूर्ण गर्जन के साथ ।
अहं शब्द का किया उच्चारण ।
तलवार थी कर ली मां ने धारण ॥
मुण्ड को था फिर ललकारा ।
केश पकड़ कर खड्ग से मारा ॥
जैसे ही मुण्ड समाने आया ।
एक वार भी सह न पाया ॥
इतने में फिर देर न लागी ।
शेष रही सेना फिर भागी ॥

दोहा

चण्ड-मुण्ड का शीश ले, मां पहुंची चंडिका के पास,
भेंट चढ़ा कर चण्ड-मुण्ड, किया भयंकर अट्टहास।

★

खुश हुई चण्डिका वरदायिनी ।
बोली कालिका से कल्याणी ॥
चण्ड-मुण्ड को तुमने मारा ।
आभारी है देवालय सारा ॥
चामुण्डा नाम से होंगी विख्यात ।
सुख ही दोगी सदैव ही दात ॥
जो भी तुम्हरी शरण में आए ।
मनवांछित तुमसे वर वह पाये ॥

श्री मार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'चण्ड-मुण्ड वध' नामक सातवाँ अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।

आठवां अध्याय

रक्तबीज-वध

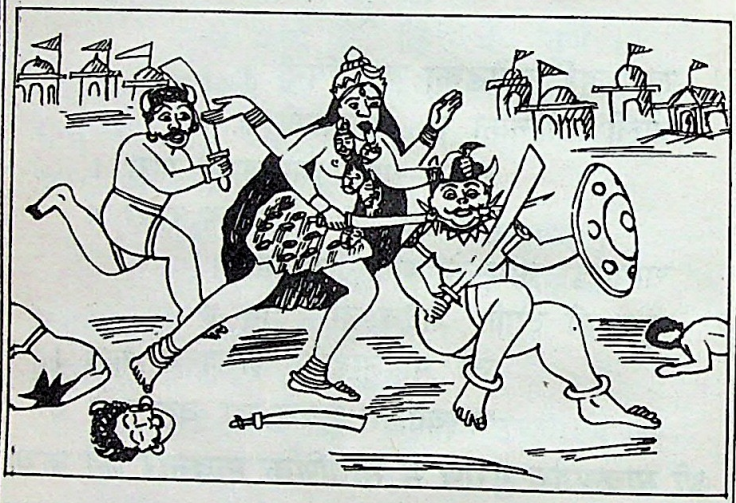

दोहा

चण्ड-मुण्ड का देख लिया, हुआ शुम्भ ने संहार ।
शेष सेना को कह दिया, हो जाए युद्ध के लिए तैयार॥

उदायुध सेनापति छियासी दैत्य लिए साथ ।
दुर्गा को हराने का करने लगा प्रयास ॥
पचास कुल कोटिवीर्य कुल के ।
धूम्रवंश वाले एक सौ कुल के ॥
कालक, दौर्हृद, मौर्यवंशी ।
शीघ्र चले कालकेयवंशी ॥
आज्ञा देकर शुम्भ भी चल पड़ा ।
सेना सहित चंडिका के आगे जाय खड़ा ॥
असुर सेना ने घेरा मां को अचानक ।
सिंह की गर्जन हुई भयानक ॥
मां ने धनुष की, की टंकार ।
चारों दिशा मची हाहाकार ॥

दोहा

हे नृप ! आगे कहूं सुनना देकर ध्यान,
ब्रह्मा, विष्णु, महेश से, देवियां प्रगटीं थीं बलवान ।

चण्डिका के पास आई सभी ।
युद्ध को तैयार थीं सभी ॥
स्वामी कार्तिकेय की शक्ति कौमारी ।
लड़ने आ गई मोर सवारी ॥
ब्रह्माणी हंसयुक्त विमान से आई ।
शिवशक्ति वृषभ त्रिशूल ले आई ॥

देवी ने भी अपने वाण थे छोड़े ।
शूल, त्रिशूल असुरों के तोड़े ॥
कमण्डल ले ब्रह्माणी जहां जातीं ।
जल छिड़क पराक्रम नष्ट कर आतीं ॥
माहेश्वरी ने त्रिशूल छोड़ा ।
वैष्णवी ने था चक्र छोड़ा ॥
कौमारी, ऐन्द्री ने किया विनाश ।
असुर सेना का होने लगा नाश ॥
बाराही देवी नारसिंही देवी ने पछाड़ा ।
शक्ति बल से उन्हें लताड़ा ॥
शिवदूती तब किया अट्टहास ।
कई मूर्छितों को बनाया ग्रास ॥
हर कोई शरणास्थल को दौड़ा ।
कईयों ने था रण को छोड़ा ॥
रक्तबीज तब क्रोध में आया ।
शिवदूती पर प्रहार जमाया ॥
ज्यूं ज्यूं उस पर पड़ता वार ।
होने लगा था एक चमत्कार ॥
रक्त की बूंद जब गिरे जहां पर ।
महादैत्य एक और बने वहां पर ॥
होता जब बज्र प्रहार ।
रक्त की बहती तब थी फुहार ॥

हर बूंद पराक्रमी असुर उपजाए ।
हो सुज्जजित वे लड़ने आए ॥
मातृगणों से प्रत्येक लड़ा वो ।
एक समय तो भारी पड़ा वो ॥
बादल बन असुर चढ़ आए ।
पल भर को देवता भी घबराए ॥
चण्डिका तब बोली हे काली ।
बन जाओ पूर्ण बलशाली ॥
इतना अपना मुंह फैलाओ ।
गिरे असुर भक्षण कर जाओ ॥
रक्त की बूंद भी गिर न पाए ।
और न रक्तबीज अब बनने पाए ॥
देवी ने किये भयंकर प्रहार ।
चामुण्डा ने रक्त पी किया उसका संहार ॥
मातृशक्तियों ने तब नृत्य कीना ।
देवों को ऐसे सुखी था कीना ॥
भगतों पे मां होती सहाई ।
शरणागत की सदा लाज बचाई ॥

श्री मार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'रक्तबीज-वध' नामक आठवाँ अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।

नौवां अध्याय

निशुम्भ-वध

दोहा

ऋषिवर बीती क्या शुम्भ पर, अब दीजिए आप सुनाय।
रक्तबीज वध वृत्तांत तो, आपने दिया बताय ॥

☆

सुन ऐ राजन देकर ध्याना ।
हो जाएगा सुनकर कल्याना ॥
रक्तबीज की जब सेना हारी,
क्रोधित हुआ था शुम्भ अति भारी ॥
निशुम्भ चला तब लड़ने ।
सेना सहित मां को पकड़ने ॥
दाएं बाएं सेना थी बड़ी ।
तब आरम्भ हुआ युद्ध उस घड़ी ॥
शुम्भ-निशुम्भ ने शक्ति दिखाई ।
देवी ने उन्हें धूल चटाई ॥
निशुम्भ ने सिंह पर किया था वार ।
देवी ने मारी दैत्य पे तलवार ॥
निशुम्भ ने तब फरसा लहराया ।
क्रोधित हुई अति महामाया ॥
निशुम्भ गिरा पृथ्वी पर आकर ।
शुम्भ दौड़ा तब रथ सजाकर ॥
शङ्खनाद तथा हुआ धनुष टंकार ।
घण्टे से गूंजा था संसार ॥
सिंह गर्जन से काँपा आकाश ।
शिवदूती किया अमङ्गल अट्टहास ॥
सम्पूर्ण असुर तब कुछ थर्राये ।
शुम्भ सहित सब क्रोध में आए ॥

शुम्भ ने अग्नियुक्त शक्ति छोड़ी ।
महोल्का शक्ति ने वह थी तोड़ी ॥
क्रोधित चण्डिका ने त्रिशूल दे मारा ।
बह निकली थी रक्त की धारा ॥
मूर्छित होकर गिर पड़ा वो ।
होश में आकर फिर लड़ा वो ॥
दस हज़ार बनी उसकी भुजाएं ।
सभी चक्र-वाण देवी पर चलायें ॥
क्रोध में आई शक्तिशाला ।
चक्र-वाणों को काट था डाला ॥
गदा को लेकर जब वह दौड़ा ।
चण्डिका ने उसके सर को फोड़ा ॥
निशुम्भ का माँ ने हृदय चीरा ।
पैदा हुआ पराक्रमी वीरा ॥
देवी ने उसे मार गिराया ।
मृत्युलोक का राह दिखाया ॥
कौमारी भी थी क्रोध में आई ।
आंधी बन कर रण में छाई ॥
ब्रह्माणी ने असुर निस्तेज कीने ।
बाराही कई यमलोक भेज दीने ॥
माहेश्वरी किया त्रिशूल से धराशायी ।
तुण्ड प्रहार करती थी वाराही ॥

वैष्णवी ने भी चक्र चलाए ।
ऐन्द्री ने बज्र से कई मार गिराए ॥
असुर कई भेजे मौत के पास ।
शिवदूती, सिंह, काली के बने कुछ ग्रास ॥

श्री मार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'निशुम्भ-वध' नामक नौ अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।

दसवां अध्याय

शुम्भ-वध

दोहा

ऋषि बोले सुन ऐ राजन । कथा मन-चित्त लगाय॥
शुम्भ का वध कैसे हुआ । दूं वृत्तांत मैं अब सुनाय॥

☆

मारा गया जब निशुम्भ ।
क्रोधित हुआ था तब शुम्भ ॥
दुर्गे से कहा उसने जा ।
दुष्टे ! अभिमान में मत तुं आ ॥
नहीं कोई निज बल तुम्हारा ।
लेती हो औरों का सहारा ॥
मां ने कहा दुष्ट समझ पहेली ।
संसार में मैं हूं एक अकेली ॥
ये तो सब विभूतियां मेरी ।
अकेली मैं ही मौत बनूं तेरी ॥
तब सब देवियां मां में समाई ।
रह गई रण में मां दूसरी नाहिं ॥
दोनों ओर से युद्ध तब छिड़ा ।
सेना ले संग देवी के शुम्भ भिड़ा ॥
अम्बिका ने जितने अस्त्र छोड़े ।
दैत्येन्द्र ने सब वे तोड़े ॥
असुरराज ने की वाणों की वर्षा ।
संभावित विजय देख वह हर्षा ॥
कुपित देवी ने धनुष को तोड़ा ।
दैत्येन्द्र ने फिर शक्ति को छोड़ा ॥
ले आया तब वह तलवार ।
मां ने रोका उसका हर वार ॥

दैत्य उद्यत मुदगर ले आया ।
मां ने वाणों से था गिराया ॥
अब हाथों की चली लड़ाई ।
देवी ने शुम्भ के चपत जमाई ॥
दैत्यराज फिर गिरकर उठा ।
उछल कर मां को आकाश ले उड़ा ॥
आकाश में किया था युद्ध आरम्भा ।
देवों को हुआ अति अचम्भा ॥
देवी ने दुष्टात्मा पृथ्वी पर पटकी ।
पर जान असुर में थी अटकी ॥
मुक्का तान वह आया दौड़ा ।
चण्डिका ने त्रिशूल था छोड़ा ॥
ऐसा हुआ था तब प्रहार ।
सह न पाया अब की मार ॥
असुर ने छोड़े जब थे प्राण ।
धरती, पर्वत, हिला आसमान ॥
सब कुछ शांत हुआ तब ।
सही दिशा में नक्षत्र आए अब ॥
चमका सूर्य होकर उज्जवल ।
बहने लगा पानी बन निर्मल ॥
उल्कापात हुआ था शान्त ।
आकाश हुआ निर्मल उपरांत ॥

अप्सराओं ने नृत्य दिखाया ।
सारा जगत ही था हर्षाया ॥
प्रज्जवलित हो गई यज्ञ में आग ।
गंधर्वों ने गाए खुशी के राग ॥
मची थी पहले जहां हा-हा-कार ।
मां की होने लगी जय जयकार ॥

श्री मार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'शुम्भ-वध' नामक दसवाँ अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।

ग्यारहवां अध्याय

देवताओं द्वारा देवी की स्तुति तथा देवी द्वारा देवताओं को वरदान

कात्यायनी देवी का देव करें स्तुतिगान,
आपके गुण हैं मां अति महान् ॥
शरणागत की संकट निवारणी ।
प्रसन्न होइये मां जगतारिणी ॥
सबकी रक्षा कीनी आपने आन ।
फिर से दिया आत्म-सम्मान ॥
जगत-आधार हो जाइए प्रसन्न ।
विश्वेश्वरी ! हो आप तो धन्य ॥
आपका पराक्रम अलंघनीय मां ।
आपकी महिमा अकथनीय मां ॥
दुष्टों का करती हो नाश ।
वैष्णवी, परमबीज माया आप ॥
आप ही मोक्ष-लाभ कराती ।
सम्पूर्ण विद्यायों की आप ही दाती ॥
जगदम्बे ! आप हो विश्व-व्यापी ।
कैसे स्तुति करें समझ न आती ॥
किन शब्दों में करे व्खान ।
आप के तो मां गुण महान् ॥
आप बताना उसकी युक्ति ।
स्तुति के लिए हो श्रेष्ठ जो उक्ति ॥
नारायणि मोक्ष करें प्रदान ।
बुद्धिरूप आप रहें विराजमान ॥

नारायणि ! आपको नमस्कार !!

स्तवन पदार्थ से परे परावाणी, सुख की आधार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार....
विश्व संहार में शक्ति रूपा,
नारायणि आपका दर्श अनूठा ।
कला-काष्ठादि बदल दो क्रम अनुसार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
शरणागत रक्षक त्रैनेत्री,
मङ्गलमयी नारायणि सुखदेत्री ।
वंदन करो स्वीकार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
सृष्टिपालक, सनातनी शक्ति,
देव करें हैं आप की भक्ति ।
गुणमयी आप गुणों की आधार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
मिटाकर संकट सुख-सम्पति दीनी,
शरण पड़ों की रक्षा कीनी ।
भक्त को दिया संकट से उबार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
ब्रह्मा रूप बन जाने वाली,
कुश मिश्रित जल छिड़काने वाली ।

मातेश्वरी आपका कहां है पार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
त्रिशूल, चंद्रमा, सर्पों की धारणी,
महावृषभ आसीन सुखकारिणी ।
रचना, तुम्हरी कुल संसार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
कौमारी रूप में स्थित नारायणि,
मोर, मुर्गों से आवृत कल्याणी ।
प्रसन्न मां होकर करो उपकार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
शंख, चक्र, शार्ंग धनुषधारी माता,
वैष्णवी शाक्तिरूप सुखदाता ।
आपकी दया का है ना पार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
नृसिंह का रूप धरने वाली,
दैत्यों का वध करने वाली ।
वंदनीय आपका हर अवतार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
शिवदूती भंयकर रूपधारिणी,
दैत्यों की हे मां संहारणी ।
आपकी जय हो बारम्बार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....

महाभयानक मुख दाढ़ों की धरनी,
मुण्डमाला सुशोभित चामुण्डा दुःखहरनी ।
आदरणीय आप हो सब प्रकार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
लक्ष्मी, लज्जा, श्रद्धा, पुष्टि, महाविद्या,
स्वधा, ध्रुवा, महारात्रि, महा-अविद्या ।
भाग्य हमरे दो संवार ।
नारायणि आपको नमस्कार .....
मेधा, सरस्वती, वरा, भूति,
बाभ्रवि, तामसी, नियता, ईशा स्वरूपी ।
हे जगजननी प्राण आधार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
हे सर्वस्वरूपा सर्वेश्वरी, सर्व-शक्तिमान,
दया का देना हमको दान ।
भयों से रक्षा करना हमार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
तीन नेत्रों से विभूषित माता,
सौम्य मुख हे वरों की दाता ।
गुण गाए है सकल संसार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
आपका त्रिशूल असुर संहारी,
ज्वालाओं युक्त अस्त्र प्रलयकारी,

भद्रकाली ! मिटें कष्ट हमार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....
घण्टे की ध्वनि–विश्व व्याप्त,
दैत्यों की थी तेज की नाशक ।
रक्त से थी सनी तलवार ।
नारायणि ! आपको नमस्कार .....

☆

विश्वेश्वरि ! आप हो प्रातः स्मरणीय ।
विश्वेशवर से भी आप हो वंदनीय ।।
सम्पूर्ण विश्व की आश्रयदाता,
दुःखभंजनी आप तो मुक्तिदाता ।
असुरों का आपने वध है कीना,
शरणागत हैं हम भी दीना ।
सब जगत के पाप मिटाइए ।
महामारी, उपद्रव से आन बचाइए ।
मातेश्वरि प्रसन्न हो जाइए,
त्रैलोकी को वर दे जाइए ।

दोहा

देवों पर प्रसन्न हो, विश्वेश्वरि वचन सुनाहिं,
मनवांछित वर मांग लो, यहां कमी कुछ नाहिं ।
☆
ऐसा कुछ भी मांग लो, जो जग का करे कल्याण ।
परउपकार के लिए दूंगी कुछ भी, आपको मैं वरदान॥
☆

देवगण ने वचन उचारा ।
सर्वेश्वरि बहाना सुख की धारा ॥
जैसे हटाई सब बाधाएं ।
फिर से ये न आने पाएं ॥
शत्रु नाश सदैव मां करना ।
दर्शन देकर कष्ट को हरना ॥
देवी ने तब कहा विचारा ।
कर जोड़ सुने था देवकुल सारा ॥
वैवस्वत मन्वन्तर अट्ठाईसवां युग आएगा ।
शुम्भ - निशुम्भ जन्म पाएगा ॥
तब मैं नंद गोप घर पैदा हो ।
नष्ट करूंगी दोनों को ॥
फिर धरुंगी एक अवतारा ।
वैप्रचित्त असुर, का करूंगी संहारा ॥
रक्तदन्ति का कहाऊंगी तब ।
महादैत्यों को यमलोक पहुंचाऊंगी जब ॥
सौ वर्ष वर्षा न होगी ।
स्तुति करेंगे मुनि और योगी ॥
अयोनिजा रूप धर आऊँगी ।
सब के आकर कष्ट मिटाऊंगी ॥
सौ नेत्र जब होंगे मेरे ।
शताक्षी नाम से जानेंगे भक्त मेरे ॥

वर्षा न होगी जब होगा न पानी ।
भरण-पोषण करूँगी शाकों द्वारा न हो जन-हानि ॥
दूंगी जीवों को जब आहार ।
शाकम्भरी होगा नाम हमार ॥
दुर्गम महादैत्य का करूँगी नाश ।
दुर्गा देवी होगा नाम विख्यात ॥
दैत्यों का करूंगी जब प्राण-हान ।
मुनि करेंगे तब स्तुति गान ॥
भीमा देवी हूंगी विख्यात ।
चहुं दिशा फैलेगा भक्तिभाव ॥
अरुण नामक होगा दैत्य भयंकर ।
त्रैलोकी की रक्षा करूंगी भ्रामरी बन कर॥
दैत्य करेंगे जब जब उत्पात ।
मिटाऊंगी तब-तब दुःख संताप ॥
बाधाएं जग की दूर करूंगी ।
भगतों को सुख भरपूर करूंगी ॥

*

श्री मार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'देवी स्तुति' नामक ग्यारहवाँ अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।

बारहवां अध्याय

देवी-चरित्रों के पाठ का माहात्म्य

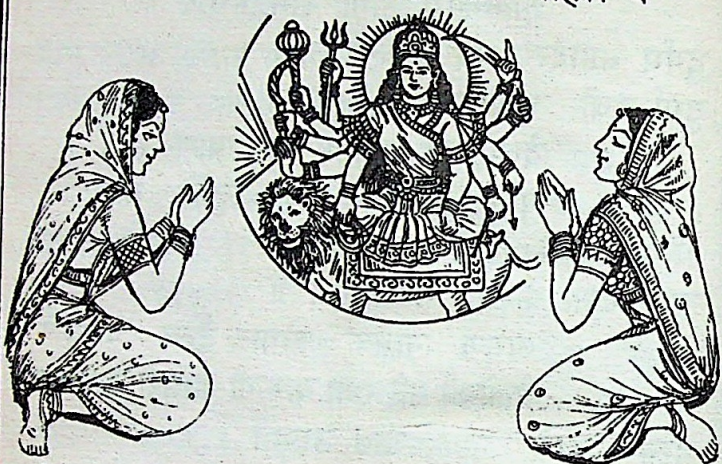

देवगण ! जो करेगा स्तोत्रों से पाठ ।
कष्ट निवारूंगी उनके आप ॥
सभी बाधायें दूर करूंगी ।
दुःख-दुविधा सब आन हरूंगी ॥

दोहा

एकाग्रचित जो स्तुति करे, बाधा न राह में आए ।
देवी स्वयं समझा रही, देवों के समक्ष जाए ॥

☆

शुम्भ-निशुम्भ वध का पढ़े जो प्रसंग ।
रहूंगी मैं सदा अंग - संग ॥
अष्टमी, चतुर्दशी, नवमी मेरे नाम ।
जो करेगा मेरा गुणगान ॥
आपत्तियां उनकी हर लूंगी मैं ।
अनिष्ट को दूर कर दूंगी मैं ॥
प्रियजनों का न होगा वियोग ।
दरिद्रता का न आएगा रोग ॥
शत्रु - लुटेरों से न होगा भय ।
शस्त्र,अग्नि, जल से रहे निर्भय ॥
चरित्र मेरा परम मङ्गलदायक ।
महामारी तीन तापों से मुक्तिदायक ॥
मन्दिर में नित्य माहात्म्य पढ़ेगा कोई ।
वहां नित्यप्रति मेरा वास होई ॥
शरदकाल की पूजा अति महान् ।
जो माहात्म्य सुने व करे स्तुतिगान ॥
यह माहात्म्य है निभर्य दाता ।
सर्व सिद्धिकारक है सुखदाता ॥
विघ्नविनाशक, शांतिदायक ।
दुःख का नाशक यह सुखदायक ॥
भूत-पिशाच का करे विनाश ।
कष्ट क्लेश न करते वास ॥

दोहा

भगवती चण्डिका आशीर्वाद दे, हुई तब अन्तर्ध्यान ।
देव होकर निर्भय करने लगे, मां का फिर गुणगान ॥

*

सब सुख फिर से देवों ने पाए ।
पाप के थे छट गए साये ॥
विश्व को वह ही मोहित करती ।
भगतों की दुःख–दुविधा हरती ॥
प्रार्थना करने पर समृद्धि प्रदाता ।
ज्ञान, मान की वह ही दाता ॥
महामारी बन करती नाश ।
उत्पत्तिकाल में ऋद्धि रूप धरती आप ॥
प्रणियों की रक्षक सनातनी माता ।
लक्ष्मी रूप ऐश्वर्य प्रदाता ॥
आपत्तिकाल में दुःख जो देती ।
स्तुतित होने पर कष्ट हर लेती ॥
धन, पुत्र, धर्म में शुभमति प्रदाती ।
उत्तम गति की मां है दाती ॥

श्री मार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'फलस्तुति' नामक बारहवाँ अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।

तेरहवां अध्याय

सुरथ और वैश्य को देवी का वरदान

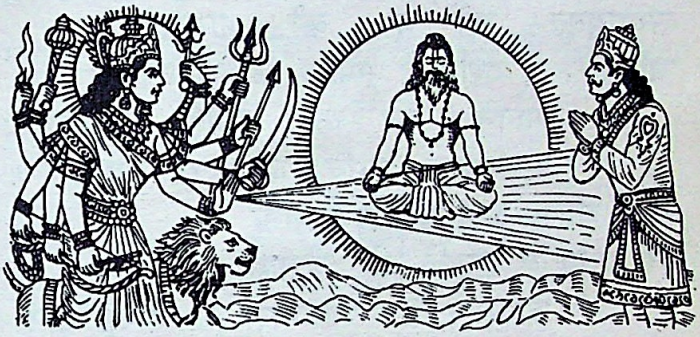

दोहा

ऋषि बोले राजन सुनो,
भगवती श्रेष्ठ माहात्म्य दूं बतलाय ।
जो शरणागत हो परमेश्वरी की,
भोग, स्वर्ग, भोग वह फल पाय ॥

☆

राजा सुरथ ने मेधा ऋषि को प्रणाम कीना ।
वैश्य ने सूक्त जप आरम्भ कीना ॥
पुष्प, धूप, हवन, तर्पण लिए ।
स्तुतिगान आरम्भ किए ॥
संयमयुक्त की मां की आराधना ।
चण्डिका ने दर्शन दे सफल की साधना ॥
मांगने को कहा कोई वरदान ।
मार्कण्डेय ऋषि कर रहे व्खान ॥
राजा बोला अखण्ड राज्य पाऊं ।
इस जन्म में शत्रुओं को हराऊं ॥
वैश्य ने कह मोहनाश का दीजो दान ।
मोक्ष का पाऊं मातेश्वरी वरदान ॥
मां बोली राजन राज्य में जाओ ।
अखण्ड राज्य-भोग मुक्ति पाओ ॥
अगले जन्म भगवान सूर्य की कृपा होगी ।
सावर्णि मनु नाम प्रसिद्धि होगी ॥
वैश्यवर्य को वही वर दीना ।
मोक्ष देने वाला ज्ञान भर दीना ॥
मार्कण्डेय ऋषि वचन उचारें ।
माता भगतों के काज संवारें ॥
तब हो गई मां अन्तर्ध्यान ।
सुरथ राजा पाया मोक्ष का ज्ञान ॥

दोनों ने भक्तिभाव से शीश निवाया ।
वरदायिनी से मनवांछित वर पाया ॥

श्री मार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवीमाहात्म्य में 'सुरथ और वैश्य को वरदान' नामक तेरहवाँ अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।

प्रार्थना

हे 'मैया सुख देने वाली,
भगतों के दुःख हर लेने वाली ।
अपनी दया बनाए रखना,
पाप से हमें बचाये रखना ।
देवगण जब प्रार्थना करी,
साक्षात आप मां सम्मुख थी खड़ी ।
मधु-कैटभ को मारने वाली,
सबके दुःख निवारने वाली ।
महिषासुर का वध था कीना,
देवों को था राज्य दीना ।
शुम्भ-निशुम्भ के मान को तोड़ा,
दैत्यों को कहीं का न छोड़ा ।

जब-जब भीड़ भगत पर आई,
आने में न देर लगाई ।
धारे आपने रूप अनेक,
शरणागत को दी थी टेक ।
शरण पड़ों की विपत्ति टाली,
आप-सा कौन है मां बलशाली ।
काली हो कहीं हो मां शिवदूती,
लीला आपकी मां अद्वितीय ।
ज्ञानहीन हम ज्ञान मां दीजो,
चिंता मन की मां हर लीजो ।
आप तो जग की पालनहारी,
दिया जो उसी से हम आभारी ।
मान-सम्मान की आप हो दाता,
दीन-हीन की आश्रयदाता ।
भय-पाप से मुक्त करो मां,
सद्गुणों से युक्त करो मां ।
सुखकरनी मां सुख बरसाओ,
दुष्कर्मों से हमें बचाओ ।
त्रैनेत्री त्रैलोकी की मालक,
सर्वजीव की आप हो पालक ।
'शौकी' की मां यही है आस,
सफल हो मेरा यह प्रयास ।

मां काली स्तोत्र

भगतों के दुःख हरने वाली ।
जय काली मां, जय जय काली .....
देवजनों ने जबहिं पुकारा,
काल रूप था पल में धारा ।
शुम्भ–निशुम्भ का वध था कीना,
इन्द्रादिक को राज्य दीना ।
देवगणों की लाज बचा ली,
जय काली मां, जय जय काली .....

चण्ड-मुण्ड को रण में मारा,
प्रलयकारी रूप था धारा ।
खप्पर खण्डा ले मां आई,
रण में भयंकर प्रलय मचाई ।
भस्म हुआ जहां दृष्टि डाली,
जय काली मां, जय जय काली .....
रक्तबीज को मार भगाया,
योगनों को था रक्त पिलाया ।
अट्टहास करे मां क्रोध में आए,
दैत्य कांपे व घबराए ।
रूप धरा था शक्तिशाली,
जय काली मां, जय जय काली .....
ब्रह्मा, विष्णु, महेश जी आए,
वरुण, कुबेर स्तुति-गान थे गाए ।
किन्नर गन्धर्व ने आसन लाया,
मां काली को था प्रगटाया ।
सभी खड़े थे बने सवाली,
जय काली मां, जय जय काली .....
नमन हमारे मां स्वीकारो,
भव से नैया पार उतारो ।

तुम्हरे दर पे शीश निवाऊं,
मुक्ति की युक्ति पा जाऊं ।
मेहर करों मां मेहरों वाली,
जय काली मां, जय जय काली .....
तेरा जो मां स्तोत्र गावै,
'शौंकी' सुख-सुविधा का वर पावै ।
तुम्हीं हो जग की पालनहार,
दया आपकी सुख-आधार ।
सब को देना सुख की लाली,
जय काली मां, जय जय काली .....

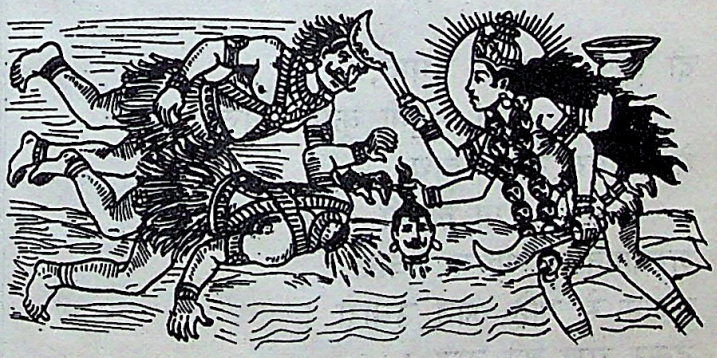

मां लक्ष्मी कृपा कीजो

दो सुख की शुभ प्रभात,
मां लक्ष्मी कृपा कीजो.....
मेरा भाग्य तुम्हरे हाथ।
मां लक्ष्मी कृपा कीजो ....
शरणागत के भाग्य संवारो,
संकट से मोहे आन उबारो ।
देकर सुख की दात ।
मां लक्ष्मी कृपा कीजो .....

भरे भण्डार कमी न कोई,
जग जाए मेरी किस्मत सोई,
जो दया–दृष्टि हो साथ ।
मां लक्ष्मी कृपा कीजो .....
मेरे वन्दन मां स्वीकारो,
मां लक्ष्मी आ भाग्य संवारो ।
दया की कर बरसात ।
मां लक्ष्मी कृपा कीजो .....
सद्गुण, वैभव घर में आए,
कृपाला जो कृपा हो जाए ।
दो मन का चैन सौगात ।
मां लक्ष्मी कृपा कीजो .....
शुभ करो शुभफल की दाता,
विनती करूं क्या मन की ज्ञाता ।
जान लो मन की बात ।
मां लक्ष्मी कृपा कीजो .....
'शौकी' पे अब मङल कर दो,
अपनी दया का हाथ भी धर दो ।
टूटे न मन की आस ।
मां लक्ष्मी कृपा कीजो .....

श्री दुर्गा देवी के 108 नामों का मङ्गलकारी जाप

जग में तुम्हरे जितने नाम,
हर नाम को मां प्रणाम ।
करूं मां सिमरण हो कल्याण,
सब नामों को मां प्रणाम ।
सती, साध्वी, भवप्रीता, भवानी ।
जय जय तुम्हरी मां कल्याणी ।
भवमोचनी, आर्या, दुर्गा, त्रिनेता,
जया, आद्या, शूलधारिणी, चित्रा ।
पिनाकधारिणी, चंद्रघंटा, महातपा,
अहंकार, रचना तुम्हरी कुल संसार ।
मन, बुद्धि, चित्तरूपा,
तुम्हरा दर्श है परम अनूपां ।
चिता, चिति, सत्ता, सर्वमन्त्रमयी,
करना सबको मङ्गलमयी ।
सत्यानन्द, स्वरूपिणी, भाविनी,
अनन्ता, गुण गायें नर-मुनि सन्ता ।

भव्या, अभव्या, शांभवी, सदागति,
बल–बुद्धि मां देना सद्मति ।
देवमाता, चिन्ता, रत्नप्रिया,
हर पल रखना अपनी दया ।
सर्व–विद्या, दक्षकन्या, दक्षयज्ञविनाशिनी,
दूर करो भय – नाशिनी ।
अपर्णा, पाटला, पाटलावती, अनेकवर्णा,
हम भी आए आपकी शरणा ।
कलमंजीररंजिनी, अमेय विक्रमा, पट्टाम्बरपरीधाना,
हे दुःखभंजन कष्ट मिटाना ।
सुरसुन्दरी, सुन्दरी, मातंगी, क्रूरा,
रोग–संताप रहे हमसे अति पूरा ।
वनदुर्गा, मतंगमुनिपूजिता, ब्राह्मी माता,
भाग्य संवारो भाग्य – विधाता ।
माहेश्वरी, ऐन्द्री, वैष्णवी, कौमारी,
सब पे रहे मां दया तुम्हारी ।
चामुण्डा, वाराही लक्ष्मी माता,
आप तो सर्व सुखों की दाता ।
पुरुषाकृति, विमला, उत्कर्षिणी,
ज्ञाना, देवों ने शक्ति को जाना ।
क्रिया, नित्या, बुद्धिदा, बहुला माता,
महिमा तुम्हरी जगत विख्याता ।

बहुल प्रेमी, सर्ववाहनवाहना, निशुम्भ–शुम्भ हरनी,
दया करो हे मां जगजननी ।
महिषासुरमर्दिनी, मधुकैटभहन्त्री, चण्डमुण्डविनाशिनी,
सर्वअसुरविनाशा, सर्वशास्त्रमयी, सर्वदानवघातिनी ।
सत्या, सर्वास्त्रधारिणी,
अनेकशस्त्रहस्ता, अनेकास्त्रधारिणी ।
कुमारी, एक कन्या, कैशोरी, युवती,
सर्व दुःखों से करना मुक्ति ।
यतिः अप्रौढ़ा, प्रौढ़ा, वृद्धमाता,
जय जय मैया सुख प्रदाता ।
बलप्रदा, महोदरी, मुक्तकेशी, घोररूपा,
आपका हर स्वरूप अनूपा ।
महाबला, रौद्रमुखी, अग्निज्वाला,
शक्ति वर दो शक्तिशाला ।
कालरात्रि, तपस्विनी, नारायणी,
सुख बरसाओ सुख प्रदायिनी ।
भद्रकाली, विष्णुमाया, जलोदरी,
आपकी शोभा मां सर्वोपरि ।
शिवदूती, अनन्ता, कराली, परमेश्वरी,
सर्वकलासम्पूर्ण मां जगदीश्वरी ।
सावित्री, प्रत्यक्षा, कात्यायनी,
नमोः नमोः

हे ब्रह्मवादिनी ।
मैया हम पर कृपा कीजे,
पाप-संताप हमरे हर लीजे ।
नाम का जाप करेगा जोई,
मुक्ति की युक्ति पाएगा सोई ।
'शौकी' जग में हो कल्याण,
सच्चे मन जो करेगा ध्यान ।
सर्व दुःखों को हरे भवानी,
मां जैसा न जग में दानी ।
सुख देना मां विविध-प्रकारा,
जन्म-मरण से हो छुटकारा ।
पूजन, वंदन मुझे हो काम,
सांस-सांस में करूं गुणगान ।
जग में तुम्हरे जितने नाम,
हर नाम को मां प्रणाम ।

नमो नमो नवदुर्गे जय जय

नमो नमो नवदुर्गे जय जय,
नमो नमो नवदुर्गे जय,
संकटहरनी, मङ्गलकरनी,
सदा हो तेरी जय । नमो नमो .....
शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, हे कूष्माण्डा माता ।
तेरा तो है भगतजनों से, हर पल मैया नाता ॥
जिस संग तेरी कृपा रहती,
रहता वह निर्भय । नमो नमो .....
चन्द्रघंटा, कात्ययनी मां, कालरात्री, महागौरी ।
प्रेम-सुधा बरसाओ मुझपे, दुविधा हर दो मेरी ॥
ममताभाव विखेर के मां,
पल दे दो सुखमय । नमो नमो .....
ऋद्धि, सिद्धि देना मैया, स्कंद जननी, सिद्धदात्री ।
वरदायिनी, ज्ञानदायिनी, काटो दुःख की रात्री ॥
'शौकी' जिसे सहारा मां दे,
मां होता वह अजेय । नमो नमो .....

क्षमा याचना

परमेश्वरी मां पर-उपकारी ।
आया हूं मैं शरण तिहारी ॥
प्रार्थना करे यह दास है ।
प्रथम यह मेरा प्रयास है ॥

कई दोष हैं मुझमें मानुं ।
पूजन, वंदन की विधि न जानुं ॥
अवगुणों ने डाले घेरे ।
क्षमा करना अपराध मां मेरे ॥

आपने मुझे सार्मथ्य दीना ।
मन्त्रहीन, भक्तिहीन जो पूजन कीना ॥
दिशाहीन को दिशा दिखाना ।
मुझ अपराधी पे दया दिखाना ॥

शरणागत हूं मां जगदम्ब ।
कृपा करना मां अविलम्ब ॥
हो जाओ जो मुझ पे प्रसन्न ।
समझूंगा मैं निज को धन्य ॥

मेरा वन्दन मां स्वीकारें ।
बेटा कह कर मुझे पुकारें ॥
मैं बालक हूं मां नादान ।
पात्र हूं तो करो कल्याण ॥

अशुभ से रखना अति दूर ।
वांछित सिद्धि से करना भरपूर ॥
मन का चैन मां दान में देना ।
शुभ कर्म वरदान में देना ॥
करूं सदा तो भला करूं मां ।
दुष्कर्मों पे ध्यान धरूं ना ॥
निवेदन करे ये 'शौकी' दास ।
सफल हो मेरा मां प्रयास ॥

आ जाओ महामाई

मेरी बार क्यों देर लगाई ।
आ जाओ, आ जाओ महामाई .....
विपत्तियां ने मां घेरा पाया,
नाजुक दिल मेरा घबराया ।
होणी कद मेरी सुणवाई ।
आ जाओ, आ जाओ महामाई .....
पंज लुटेरे खड़े ने घेरे,
किवें बच पावां बस न मेरे ।
रहमत कर मां करो भलाई ।
आ जाओ, आ जाओ महामाई .....
पिछला भुल्ल भविख सवारां,
हारिया पहला हुण ना हारां ।
होर न होवे जग हसाई ।
आ जाओ, आ जाओ महामाई .....

दुःख–दुविधा मां मेरी हर दे,
जगदाती मां दया दा वर दे ।
पूर दे मेरी कष्ट दी खाई ।
आ जाओ, आ जाओ महामाई .....
'शौकी' दी विनती स्वीकारो,
मेहर दा छिट्टा सब ते मारो ।
देके सुख दी मां रुशनाई ।
आ जाओ, आ जाओ महामाई .....

अमृत बरसेगा

झुक माई दे द्वार – अमृत बरसेगा,
कर चरणां नाल प्यार – अमृत बरसेगा .....
इस दाती दा प्यार अमुल्ला,
सब लई इसदा द्वार ऐ खुल्हा ।
सुख दे भरे भण्डार । अमृत वरसेगा .....
दर ते वगदे सुख दे झरने,
लोड़वंदां दे घर इस भरने ।
अन्न–धन देवे अपार । अमृत बरसेगा .....
इस माई दे कौतक न्यारे,
बड़े–बड़े अपराधी तारे ।
देवेगी कष्ट नवार । अमृत बरसेगा .....
इस दाती दी महिमा न्यारी
नाम 'च 'शौकी' मार लै तारी
देवेगी भाग निवार । अमृत बरसेगा .....

खैर झोली पादे दातिए

खुल्हा द्वार देख दर्शन नूं आया,
खैर झोली पादे दातिए .....
मैं ते थां थां दा ठुकराया ।
खैर झोली .....
रहमतां तेरीयां दा, हर पासे नूर मा,
कट्ट के क्लेश करो, सुखां भरपूर मां ।
मैं ते आस वाला दीपक जलांया ।
खैर झोली .....
दुःख माएं जिंदड़ी दे, सहे नहियों जावंदे,
जानीजाण देख लै, कहे नहियों जांवदे ।
किसे दोस्ती दा वी मुल्ल न पाया ।
खैर झोली .....
दर मोहरे अड्डियां मां आस वाला कासा मां,
मेहर करो ऐसी मुड़े, बुल्हीयां नु हासा मां ।
काहनुं समझिया 'शौकी' नुं पराया ।
खैर झोली .....

द्वारा माई दा

दूरों दूरों मारे चमकां, द्वारा माई दा,
आओ रलमिल के मंगिये सहारा माई दा .....
उच्चीयां चढ़ाईयां चढ़, जो वी दर आ गया,
मंगियों बग़ैर ओह, सब कुछ पा गया ।
जिहड़ा श्रद्धा लियावे ओहो प्यारा माई दा ।
आओ रलमिल के.....
खोहल के भण्डारे बैठी, जग दी ओह दानी ऐ ।
करे कल्याण ओह, जग कल्याणी ऐ ।
कहंदे जग तों ऐ द्वारा, न्यारा माई दा ।
आओ रलमिल के .....
मेहरबान दाती होवे, सब ते दयाल ऐ,
कई बार तक्किया ऐ, भगतां कमाल ऐ ।
'शौकी' दया वाला अनमुक भण्डारा माई दा ।
आओ रलमिल के .....

मैया तेरी आरती जय मां

श्रद्धा–विश्वास की मां, थाली सजाई,
भावना की मैया आज, ज्योति जलाई ।
रखना भक्त की लाज ।
मैया तेरी आरती जय मां .....
सुखदाती आप हो, दुखभंजन माता,
भगतों के संग तो हर पल का नाता ।
कीजो सफल मां काज ।
मैया तेरी आरती जय मां .....
अटल, अखण्ड है तुम्हरी मां ज्योति,
सुख के है बांटे मां, भगतों को मोती ।
कष्टों का करो अब नाश ।
मैया तेरी आरती जय मां .....
पूजन न जानुं मैया, वंदन न जानुं,
दोषी हूँ पाप कई, मुझमें मां मानुं ।
चरणों के रखना मां पास ।
मैया तेरी आरती जय मां .....
मन–मन्दिर करो, मां आकर बसेरा,
आशा हूं लाया मैया, रख लो मन मेरा ।
कृपा का देना मां हाथ ।
मैया तेरी आरती जय मां .....
ऋद्धि–सिद्धि की मैया, आप हो दाती,
सुखों का वर देना, मैया वरदाती ।
टूटे ना 'शौकी' की मां आस ।
मैया तेरी आरती जय मां .....

श्री दुर्गा नवरात्र व्रत कथा

व्रत की विधि

इस व्रत में उपवास या फलाहार आदि का कोई विशेष नियम नहीं है । प्रातः उठकर स्नान करके, मन्दिर में जाकर या घर पर ही नवरात्रों में दुर्गा जी का ध्यान करके यह कथा पढ़नी चाहिए । कन्याओं के लिए यह व्रत विशेष फलदायक है । श्री जगदम्बा जी की कृपा से सब विघ्न दूर होते हैं । कथा के अन्त में बारम्बार ' दुर्गा माता तेरी सदा ही जय ' का उच्चारण करें ।

कथा प्रारम्भ

वृहस्पति जी बोले–हे ब्रह्मन ! आप अत्यन्त बुद्धिमान, सर्वशास्त्र और चारों वेदों के जानने वालों में श्रेष्ठ हो । प्रभु ! कृपा कर मेरा वचन सुनो । चैत्र आश्विन, माघ और आषाढ़ के शुक्ल पक्ष में नवरात्र का व्रत और उत्सव क्यों किया जाता है ? हे भगवन् ! इस व्रत का क्या फल है ? किस प्रकार करना उचित है और पहले इस व्रत को किसने किया है ? सो विस्तार से कहो । वृहस्पति जी का ऐसा वचन सुन कर ब्रह्मा जी कहने लगे कि हे वृहस्पते ! प्राणियों का हित करने की इच्छा से तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया । जो मनुष्य मनोरथ पूर्ण करने वाली दुर्गा, महादेव, सूर्य और नारायण का ध्यान करते हैं वे मनुष्य धन्य हैं । यह नवरात्र व्रत सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला है । इसके करने से पुत्र चाहने वाले को पुत्र, धन चाहने वाले को धन, विद्या चाहने वाले को विद्या और सुख चाहने वाले को सुख मिल सकता है । इस व्रत के करने से रोगी मनुष्य का रोग दूर हो जाता है और कारागार में बन्द हुआ मनुष्य बन्धन से छूट जाता है । मनुष्य की तमाम आपत्तियाँ दूर हो जाती हैं और उसके घर में सम्पूर्ण सम्पत्तियाँ आकर उपस्थित हो जाती हैं । वन्ध्या और काक वन्ध्या को इस

व्रतं कैं करने से पुत्र पैदा हो जाता है । समस्त पापों को दूर करने वाले इस व्रत के करने से ऐसा कौन सा मनोरथ है जो सिद्ध नहीं हो सकता ? जो प्राणी इस अलभ्य मनुष्य की देह को पाकर भी नवरात्र का व्रत नहीं करता है वह माता–पिता से हीन हो जाता है– अर्थात उसके माता–पिता मर जाते हैं और वह अनेक दुःखों को भोगता है । उसके शरीर में कुष्ठ हो जाता है और अंगहीन हो जाता है, उसके सन्तानोत्पत्ति नहीं होती इस प्रकार वह मूर्ख अनेक दुःख भोगता है । इस व्रत को न करने वाला मनुष्य धन और धान्य से रहित हो कर भूख और प्यास के मारे पृथ्वी पर घूमता फिरता है और गूंगा हो जाता है । जो सधवा स्त्रियां भूल से इस व्रत को नहीं करती हैं वे पतिहीन होकर नाना दुःखों को भोगती हैं । यदि व्रत करने वाला मनुष्य सारे दिन का उपवास न कर सके तो एक समय भोजन करे और उस दिन बान्धवों के सहित नवरात्र व्रत की कथा श्रवण करे । हे वृहस्पते ! जिसने पहले इस महाव्रत को किया उसका पवित्र इतिहास मैं तुम्हे सुनाता हूँ । तुम सावधान होकर सुनो । इस प्रकार ब्रह्मा जी का वचन सुन कर वृहस्पति जी बोले–हे ब्रह्मन ! मनुष्यों का कल्याण करने वाले इस व्रत के इतिहास को मेरे लिए कहो, मैं सावधान होकर सुन रहा हूँ । आपकी शरण आये हुए मुझ पर कृपा करो ।

ब्रह्मा जी बोले–

पीठत नामक मनोहर नगर में एक अनाथ नाम का ब्राह्मण रहता था वह भगवती दुर्गा का भक्त था । उसके सम्पूर्ण सद्गुणों से युक्त मानो ब्रह्मा की सबसे पहली रचना हो, ऐसी यथार्थ नाम वाली सुमति नाम की एक अत्यन्त सुन्दर पुत्री पैदा हुई । वह कन्या सुमति अपने पिता के घर बालकपन में अपनी सहेलियों के साथ क्रीड़ा करती हुई इस प्रकार बढ़ने लगी कि जैसे शुक्ल पक्ष की कला बढ़ती है । उसका पिता प्रतिदिन जब दुर्गा की पूजा और होम किया करता था उस समय वह भी नियम से वहां उपस्थित होती थी । एक दिन वह सुमति अपनी सखियों के साथ खेलने लग गई और भगवती के पूजन में उपस्थित नहीं हुई । उसके पिता को पुत्री की ऐसी असावधानी देखकर क्रोध आया और पुत्री से कहने लगा–हे दुष्ट पुत्री ! आज प्रभात से तूने भगवती का पूजन नहीं किया, इस कारण मैं किसी कुष्ठी और दरिद्री मनुष्य के साथ तेरा विवाह करुँगा । इस प्रकार कुपित पिता का वचन सुनकर सुमति को बड़ा दुःख हुआ और पिता से कहने लगी– हे पिता जी! मैं आपकी कन्या हूँ । मैं आपके सब तरह से अधीन हूं । जैसी आपकी इच्छा हो मेरा विवाह कर सकते हो । पर होगा वही जो मेरे भाग्य में लिखा है मेरा तो इस पर पूर्ण विश्वास

है । मनुष्य न जाने कितने मनोरथों का चिंतन करता है पर होता वही है जो भाग्य में विधाता ने लिखा हो । जो जैसा कार्य करता है उसको फल भी उसी कर्म के अनुसार ही मिलता है, क्योंकि कर्म करना मनुष्य के अधीन है पर फल देव के अधीन है । जैसे अग्नि में पड़े हुए तृणादि उसको अधिक प्रदीप्त कर देते हैं उसी प्रकार अपनी कन्या के ऐसे निर्भयता से कहे हुए वचन सुन कर ब्राह्मण को और अधिक क्रोध आया । तब उसने अपनी कन्या का एक कुष्ठी के साथ विवाह कर दिया और अत्यन्त क्रुद्ध होकर पुत्री से कहने लगा, जाओ-२ जल्दी जाओ अपने कर्म का फल भोगो । देखें भला भाग्य के भरोसे रहकर क्या करती हो । इस प्रकार से कहे हुए पिता के कटु वचनों को सुनकर सुमति मन में विचार करने लगी कि -यही मेरा बड़ा दुर्भाग्य है जिससे मुझे ऐसा पति मिला । इस तरह अपने दुःख का विचार करती हुई वह सुमति अपने पति के साथ वन में चली गई और भयावने कुशायुक्त उस स्थान पर उन्होंने रात बड़े कष्ट से व्यतीत की । उस गरीब बालिका की ऐसी दशा देखकर भगवती पूर्व पुण्य के प्रभाव से प्रकट होकर सुमति से कहने लगीं कि हे दीन ब्राह्मणी ! मैं तुम पर प्रसन्न हूं तुम जो चाहो सो वरदान मांग सकती हो । मैं

प्रसन्न होने पर मनवांछित फल देने वाली हूँ । इस प्रकार भगवती दुर्गा का वचन सुनकर ब्राह्मणी कहने लगी कि आप कौन हो जो मुझ पर प्रसन्न हुई हो, यह सब मेरे लिए कहो और अपनी कृपा-दृष्टि से मुझ दीन दासी को कृतार्थ करो । ऐसा ब्राह्मणी का वचन सुनकर देवी कहने लगी, कि मैं आदि शक्ति हूँ-मैं ही ब्रह्मविद्या और सरस्वती हूँ । मैं प्रसन्न होने पर प्राणियों का दुःख दूर कर उनको सुख प्रदान करती हूँ । हे ब्राह्मणी ! मैं तुझ पर तेरे पूर्व जन्म के पुण्य के प्रताप से प्रसन्न हूं । तुम्हारे पूर्व जन्म का वृतान्त सुनाती हूं सुनो । तू पूर्व जन्म में निषाद (भील) की स्त्री थी और अति पतिव्रता थी । एक दिन तेरे पति निषाद ने चोरी की । चोरी करने के कारण तुम दोनों को सिपाहियों ने पकड़ लिया और ले जाकर जेलखाने में कैद कर दिया । उन लोगों ने तेरे को और तेरे पति को भोजन भी नहीं दिया । इस प्रकार नवरात्र के दिनों में तुमने न तो कुछ खाया और न जल ही पिया । इस लिए नौ दिन तक नवरात्र का व्रत हो गया । हे ब्राह्मणी ! उन दिनों में जो व्रत हुआ उस व्रत के प्रभाव से प्रसन्न होकर मैं तुम्हें मनोवांछित वस्तु दे रही हूं । तुम्हारी जो इच्छा हो सो मांगो । इस प्रकार दुर्गा के कहे हुए वचन सुनकर ब्राह्मणी बोली अगर आप

मुझ पर प्रसन्न हैं तो हे दुर्गे, मैं आपको प्रणाम करती हूँ । कृपा करके मेरे पति के कोढ़ को दूर करो । देवी कहने लगी कि उन दिनों में ज़ो तुमने व्रत किया उस व्रत के एक दिन का पुण्य अपने पति का कोढ़ दूर करने को अर्पण करो । मेरे प्रभाव से तेरा पति कोढ़ से रहित और सोने के समान शरीर वाला हो जाएगा । ब्रह्मजी बोले कि इस प्रकार देवी के वचन सुनकर वह ब्राह्मणी बहुत प्रसन्न हुई और पति को निरोग करने की इच्छा से ' ठीक है ' ऐसे बोली । तब उसके पति का शरीर भगवती दुर्गा की कृपा से कुष्ठहीन होकर अति कान्तियुक्त हो गया । जिसकी कान्ति के सामने चन्द्रमा की कान्ति भी क्षीण हो जाती है । वह ब्राह्मणी पति की मनोहर देह को देखकर देवी को अति पराक्रम वाली समझकर स्तुति करने लगी– हे दुर्गे ! आप दुर्गति को दूर करने वाली, तीनों जगत का सन्ताप हरने वाली, समस्त दुःखों को दूर करने वाली, रोगी मनुष्य को निरोग करने वाली, प्रसन्न होने पर मनवांछित वस्तु देने वाली और दुष्ट मनुष्यों का नाश करने वाली हो । तुम ही सारे जगत की माता और पिता हो । हे अम्बे ! मुझ अपराध रहित अबला को मेरे पिता ने कुष्ठी मनुष्य के साथ विवाह कर मुझे घर से निकाल दिया था । उनकी निकाली हुई पृथ्वी पर घूमने लगी थी । आप ने ही मेरा इस आपत्ति रूप

समुद्र से उद्धार किया है । हे देवी ! मैं आपको प्रणाम करती हूं । मुझ दीन की रक्षा करो । ब्रह्मा जी बोले कि हे वृहस्पते ! इसी प्रकार उस सुमति ने मन से देवी की बहुत स्तुति की, उससे की हुई स्तुति सुनकर देवी को बहुत सन्तोष हुआ और ब्राह्मणी से कहने लगी हे ब्राह्मणी ! तेरे उद्दालक नाम का अति बुद्धिमान, धनवान, कीर्तिमान और जितेन्द्रिय पुत्र शीघ्र ही होगा । ऐसे कहकर वह देवी उस ब्राह्मणी से फिर कहने लगी कि हे ब्राह्मणी ! और जो कुछ तेरी इच्छा हो वही मनवांछित वस्तु मांग सकती हो । ऐसा भगवती दुर्गा का वचन सुनकर सुमति बोली कि हे दुर्गे ! अगर आप मेरे पर प्रसन्न हैं तो कृपा कर मुझे नवरात्र व्रत विधि बतलाइये । हे दयावती! जिस विधि से नवरात्र व्रत करने से आप प्रसन्न होती हैं उस विधि को और उसके फल को मेरे से विस्तार से वर्णन करें । इस प्रकार ब्राह्मणी के कहे वचन सुनकर दुर्गा कहने लगी कि ब्राह्मणी, मैं तुम्हारे लिए सम्पूर्ण पापों को दूर करने वाली नवरात्र विधि को बतलाती हूँ जिसको सुनने से तमाम पापों से छूटकर मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है । आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर नौ दिन तक विधि पूर्वक व्रत करे यदि दिन भर व्रत न कर सके तो एक समय भोजन करे । पढ़े लिखे ब्राह्मणों से पूछ कर घट स्थापना करे और वाटिका बनाकर

उसको प्रतिदिन जल से सींचे । महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती इसकी मूर्तियाँ बनाकर उनको नित्य विधि सहित पूजा करे और पुष्पों से विधि पूर्वक अर्घ्य दे । बिजौरा के फूल से अर्घ्य देने से रूप की प्राप्ति होती है और जायफल से कीर्ति और दाख से कार्य की सिद्धि होती है ।

आँवले से सुख और केले से भूषण की प्राप्ति होती है । इस प्रकार फलों से अर्घ्य देकर यथा विधि हवन करें । खाड, घी, गेहूं, शहद, जो, तिल, बिल्वपत्र, नारियल, दाख, और कदम्ब इनसे हवन करें । गेहूँ से होम करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है । खीर से, चम्बा के पुष्पों से धन और पत्तों से तेज और सुख की प्राप्ति होती है आँवले से कीर्ति और केले से पुत्र होय । कमल से राजसम्मान और दाखों से सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होती है । खांड, घी, नारियल, शहद, जौ और तिल इनसे तथा फलों से होम करने से मनवाछित वस्तु की प्राप्ति होती है । व्रत करने वाला मनुष्य इस विधान से होम कर आचार्य को अत्यन्त नम्रता के साथ प्रणाम करे और यज्ञ की सिद्धि के लिए उसे दक्षिणा दे । इस महाव्रत को पहले बताई हुई विधि के अनुसार जो कोई करता है उसके सब मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं । इसमें तनिक भी संशय नहीं है । इन नौ दिनों में जो कुछ दान आदि दिया जाता है, उसका करोड़ों गुना फल मिलता है । इस नवरात्र के व्रत करने से ही अश्वमेध यज्ञ का फल

मिलता है । हे ब्राह्मणी ! इस सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाले इस उत्तम व्रत को तीर्थ, मन्दिर अथवा घर में ही विधि के अनुसार करें । ब्रह्मा जी बोले कि–हे वृहस्पते, इस प्रकार ब्राह्मणी को व्रत की विधि फल बताकर देवी अन्तर्ध्यान हो गई । जो पुरुष या स्त्री इस व्रत को भक्ति पूर्वक करता है वह इस लोक में सुख पाकर अन्त में दुर्लभ मोक्ष को प्राप्त होता है । हे वृहस्पते, यह दुर्लभ व्रत का महात्म्य मैंने तुम्हारे लिए बतलाया है । ऐसे ब्रह्मा जी के वचन सुनकर वृहस्पति जी आनन्द के कारण रोमांचित हो गये और ब्रह्मा जी से कहने लगे कि हे ब्रह्मन, आपने मुझ पर अति कृपा की जो अमृत के समान इस नवरात्र का महात्म्य सुनाया । हे प्रभो, आपके बिना कौन इस महात्म्य को सुना सकता है ? ऐसे वृहस्पति जी के वचन सुनकर ब्रह्मा जी बोले कि हे वृहस्पते, तुमने सब प्राणियों के हित करने वाले इस अलौकिक व्रत को पूछा इस लिए तुम धन्य हो । यह भगवती शक्ति सम्पूर्ण लोकों की पालन करने वाली है, इस महादेवी के प्रभाव को कौन जान सकता हैं !

अन्त में वृहस्पति जी ने भगवान ब्रह्म जी को नमस्कार किया और भगवान अन्तर्ध्यान हो गये । फिर वृहस्पति जी ने 'दुर्गा माता तेरी सदा ही जय' का उच्चारण किया ।

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी ।
नमो नमो अम्बे दुख हरनी ॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी ।
तिहूं लोक फैली उजियारी ॥
शशि ललाट मुख महाविशाला ।
नेत्र लाल भृकुटी विकराला ॥
रूप मातु को अधिक सुहावै ।
दरश करत जन अति सुखपावै ॥
तुम संसार शक्ति लै कीना ।
पालन हेतु अन्न धन दीना ॥
अन्नपूरणा हुई जगपाला ।
तुमहीं आदि सुन्दरी बाला ॥
प्रलय काल सब नाशनहारी ।
तुम गौरी शिव शंकर प्यारी ॥

शिव योगी तुम्हरे गुण गावैं ।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावैं ॥
रूप सरस्वती का तुम धारा ।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥
धरो रूप नरसिंह को अम्बा ।
परगट भई फाड़ के खम्बा ॥
रक्षा कर प्रहलाद बचायो ।
हिरण्याकुश को स्वर्ग पठायो ॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं ।
श्री नारायण अंग समाहीं ॥
क्षीरसिंधु में करत विलासा ।
दयासिन्धु दीजै मन आसा ॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी ।
महिमा अमित न जात बखानी ॥
मातंगी धूमावति माता ।
भुवनेश्वरि बगला सुख दाता ॥

श्री भैरव तारा जग तारणि।
छिन्न भाल भवदुःख निवारणि॥
केहरि वाहन सोइ भवानी।
लंगूर वीर चलत अगवानी॥
कर में खप्पर खड्ग विराजे।
जाको देख काल डर भाजे॥
सोहे अस्त्र और तिरशूला।
जाते उठत शत्रु हिय शूला॥

नाम कोटि में तुम्हीं विराजत।
तिहूं लोक में डंका बाजत॥
शुंभ निशुंभ दानव तुम मारे।
रक्तबीज शंखन संहारे॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी।
जेहि अघ भार मही अकुलानी॥
रूप कराल कालि को धारा।
सेन सहित तुम तिहि संहारा॥

परी भीर संतन पर जब-जब ।
भई सहाय मातु तुम तब-तब ॥
अमरपुरी अरु बासव लोका ।
तव महिमा सब कहै अशोका ॥
बाला में है ज्योति तुम्हारी ।
तुम्हें सदा पूजें नर-नारी ॥
प्रेम भक्ति से जो जस गावैं ।
दुख-दारिद्र निकट नहिं आवैं ॥
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई ।
जन्म मरण ते सो छुटि जाई ॥
जोगी सुर-मुनि कहत पुकारी ।
योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी ॥
शंकर आचरज तप कीनो ।
काम क्रोध जीति सब लीनो ॥
निशि दिन ध्यान धरो शंकर को ।
काहु काल नहिं सुमिरो तुमको ॥

शक्ति रूप को मरम न पायो ।
शक्ति गई तब मन पछितायो ॥
शरणागत हुई कीर्ति बखानी ।
जै जै जै जगदम्ब भवानी ॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा ।
दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा ॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो ।
तुम बिन कौन हरे दुख मेरो ॥
आशा तृष्णा निपट सतावै ।
रिपु मूरख मोहिं अति डरपावै ॥
शत्रु नाश कीजै महारानी ।
सुमिरौं इकचित्त तुम्हें भवानी ॥
करो कृपा हे मातु दयाला ।
ऋद्धि सिद्धि दै करहु निहाला ॥
जब लगि जियों दया फलपाऊं ।
तुम्हरो जस मैं सदा सुनाऊं ॥

दुर्गा चालीसा जो नर गावैं।
सब सुख भोग परम पद पावैं॥
देवीदास शरण निज जानी।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी॥

श्री दुर्गा वदना

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रुपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमोनमः॥
चित्तिरुपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

आरती माता अम्बे की

ओ अम्बे, तुम हो जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।
तेरे जगत के भक्त जनों पर भीड़ पड़ी है भारी,
दानव दल पर टूट पड़ी मां करके सिंह सवारी,
सौ, सौ सिंहों सी तू बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तू ही ललकारती, ओ मैया.....।
मां-बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता,
पूत-कपूत सुने हैं पर न माता सुनी कुमाता,
सब पर करुणा दर्शाने वाली, सब को हरसाने वाली,
नैया भंवर से उबारती, ओ मैया.....।
नहीं मांगते धन और दौलत, न चांदी न सोना,
हम तो मांगें मां तेरे चरणों में, छोटा सा कोना,
सब पर अमृत बरसाने वाली, विपदा, मिटाने वाली,
सतियों के सत को संभारती, ओ मैया.....।
आदि शक्ति भगवती भवानी, हो जग की हितकारी,
जिसने याद किया आई मां, करके सिंह सवारी,
मैया करती किरपा, किरपाली, रखती जन की रखवाली,
दुष्टों को पल में माता मारती, ओ मैया.....।
भक्त तुम्हारे निशदिन मैया, तेरे ही गुणगावें,
मनवांछित वर दे दे इनको, तुझसे ही ध्यान लगावें,
मैया तू ही वर देने वाली, जाये न कोई खाली,
दर पै तुम्हारे माता मांगते, ओ मैया.....।
चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली,
वरद हस्त सर पर रख दो, मां संकट हरने वाली,
मैया भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,
काशी के कारज तू ही सारती, ओ मैया.....।
ओ अम्बे, तुम हो जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।।

• • • • • • • • •

आरती

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े ।
पान सुपारी ध्वजा नारियल ले ज्वाला तेरी भेंट करे ॥
सुन जगदम्बा कर न विलम्बा सन्तन का भण्डार भरे ।
सन्तन प्रतिपाली सदा कुशाली जय काली कल्याण करे ॥
बुद्धि विधाता तू जग माता मेरा कारज सिद्ध करे ।
चरण कमल का लिया आसरा शरण तुम्हारी आन परे ॥संत०
वरा-वरानने सब जग मोह्य तरुण रूप अनूप धरे ।
माता होकर पुत्र खिलावे भार्या होकर प्रेम करे ।
सन्तन सुखदाई सदा सहाई सन्त खड़े जयकार करें ।
ब्रह्मा विष्णु महेश सहसफन लिये भेंट तेरे द्वार खड़े ॥संत०
अटल सिंहासन बैठी माता सिर सोने का छत्र फिरे ।
वार शनिश्चर कुमकुम बरणो जब लोंकड़ हुकम करे ॥संत०
खड्ग त्रिशूल हाथ लिए रक्तबीज को भस्म करे ।
शुम्भ निशुम्भ पछाड़े माता महिषासुर को पकड़ दले ॥संत०
आदि अवतार आदि का रजत अपने जन को कष्टहरे ।
कोप होय कर दानव मारे चण्ड मुण्ड सब चूर करे ॥संत०
सौम्य स्वभाव धरे गौरी माता उनकी अरज कबूल करे ।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी अखिल भुवन में राजकरे ॥संत०
दर्शन पावें मंगल गावें सिद्ध साधु दर भेंट धरे ।
ब्रह्मा वेद पढ़ें तेरे द्वारे शिव शंकर जी ध्यान धरे ॥संत०
इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती चंवर कुबेर डुलाय रहे ।
जय जननी जय माता भवानी अटल भवन में राज करे ॥संत०

• • • • • • • • • •

JOTHI 146